



लाल डायरी से डरे हुए हैं गहलोत, राजस्थान में बोले अभित शाह, कांग्रेस सरकार ने किसानों के लिए कुछ नहीं किया

भोपाल। राजस्थान में होने वाले चुनाव को लेकर राजनीति खूब हो रही है। इन सब के बीच गृह मंत्री अभित शाह आज राजस्थान में हैं। उन्होंने गंगापुर में शसहकार किसान सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने राज्य की कांग्रेस सरकार पर भी निशाना साधा। अपने संबोधन की शुरुआत में गृह मंत्री ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व और वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम के कारण देश ने कुछ दिन पहले ही चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहराया है। इससे समग्र देश के अंदर नई ऊर्जा व नए विश्वास का संचार हुआ है। उन्होंने विपक्ष पर तंज सकते हुए कहा कि आज मैं नारे लगाने वालों से कहना चाहता हूँ कि नारे लगाने की बजाय चंद्रयान को आगे बढ़ाया जाता तो नारे लगाने की नीबट नहीं आती। अशोक गहलोत को घेरा: अभित शाह ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर भी निशाना साधा।



शाह ने कहा कि आज-कल राजस्थान के मुख्यमंत्री गहलोत जी लाल रंग की डायरी से बहुत डर रहे हैं, क्योंकि उस डायरी में अनेक राज छुपे हैं। डायरी का रंग भले ही लाल है लेकिन उसके अंदर काले कारनामों और अरबों के भ्रष्टाचार का कच्चा चिट्ठा है। भाजपा नेता ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने किसानों के लिए कुछ नहीं किया जबकि भाजपा की सरकार ने किसानों के कल्याण के लिए अनेक कदम

उठाये हैं। कांग्रेस की सरकार में कृषि बजट 22 हजार करोड़ रुपए था जिसे मोदी जी 6 गुना बढ़ा कर 1 लाख 25 हजार करोड़ रुपए करने का काम किया है। मैं यहाँ आया तो एक किसान ने कहा कि राजस्थान में बिजली की बहुत समस्या है, हमें बिजली ही नहीं मिलती। तो वहीं दूसरे किसान ने कहा कि एक तो हमें बिजली नहीं मिलती, दूसरी ओर बिजली की खरीदी में धांधली हो रही है।

भाजपा को जिताएंगे लोग

भाजपा नेता ने साफ तौर पर कहा कि राजस्थान में किसानों को बिजली नहीं मिल रही है और बिजली खरीदी में भी धांधली की जा रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किसानों के लिए कई योजनाएं शुरू कीं और हर साल 6 हजार रुपए किसान सम्मान निधि के रूप में दे रही है। शाह ने कहा कि राजस्थान ने 2014 और 2019 दोनों लोकसभा चुनावों में सभी सीटें मोदी जी की झोली में डाली थीं। 2024 में भी जनता फिर से सभी सीटों पर भाजपा को जिताएगी। इसके साथ ही जनता लोकसभा चुनाव से पहले होने वाले 2023 के विधानसभा चुनाव में सत्ता परिवर्तन के लिए भी तैयार है।

चंद्रयान-3 के वैज्ञानिकों को सलाम करते-करते भावुक हो गए पीएम मोदी, संबोधन के दौरान छलक गये खुशी के आंसू

बंगलुरु। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने चंद्रयान-3 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों को भाषण दिया। चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग के लिए इसरो टीम के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए पीएम मोदी भावुक हो गए। बंगलुरु में इसरो टेलीमेट्री ट्रेकिंग एंड कमांड नेटवर्क मिशन कंट्रोल कॉम्प्लेक्स में बोलते हुए, पीएम मोदी ने कहा, "जिस स्थान पर चंद्रयान-3 का चंद्रमा लैंडर उतरा, उस बिंदु को 'शिवशक्ति' के नाम से जाना जाएगा। मैं जल्द से जल्द आपसे मिलना चाहता था और आपको सलाम करना चाहता था। आपके प्रयासों को सलाम करता हूँ। इसरो टेलीमेट्री ट्रेकिंग एंड कमांड नेटवर्क (आईएसटीआरएसी) में टीम इसरो को संबोधित करते हुए उन्होंने उस स्थान की भी घोषणा की जहां चंद्रयान-2 ने 2019 में चंद्र सतह पर अपने पदचिह्न छोड़े थे। उन्होंने कहा कि दुर्दुर्लभ स्थल को शतिरंगा प्वाइंट के नाम से जाना जाएगा। इस बीच, इसरो के अध्यक्ष डॉ. एस सोमनाथ ने



अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा मैं दक्षिण अफ्रीका में था लेकिन मेरा मन आपके साथ था। पीएम मोदी ने कहा "चंद्रमा की सतह पर वह स्थान जहां चंद्रयान-2 ने अपने पैरों के निशान छोड़े हैं, उसे शतिरंगा के नाम से जाना जाएगा। ये भारत के हर प्रयास के लिए प्रेरणा बनेगा। यह हमें याद दिलाएगा कि कोई भी विफलता अंतिम नहीं होती। इससे पहले शुक्रवार को, कर्नाटक के मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता सिद्धार्थमैया को बंगलुरु में इसरो के चंद्रयान-3 मिशन के सफल वैज्ञानिकों से मुलाकात की पूर्व

ब्रज मंडल यात्रा निकालने पर अड़े आयोजक

28 अगस्त तक नूंह में इंटरनेट बंद, SMS भी नहीं भेज पाएंगे लोग

नूंह। दक्षिणपंथी हिंदुत्व संगठनों सभ्यता डोंगल सेवाएं निरालंबित कर दी जाएंगी। प्रशासन की सतर्कता: प्रशासन को डर है कि भीड़ को संगठित करने के लिए मोबाइल इंटरनेट सेवाओं और ब्लॉक एसएमएस का दुरुपयोग किया जा सकता है, जो चंद्रयान-3 के सफल लैंडिंग के लिए प्रेरणा बनेगा। यह हमें याद दिलाएगा कि कोई भी विफलता अंतिम नहीं होती। इससे पहले शुक्रवार को, कर्नाटक के मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता सिद्धार्थमैया को बंगलुरु में इसरो के चंद्रयान-3 मिशन के सफल वैज्ञानिकों से मुलाकात की पूर्व

जो 60 साल में नहीं हुआ, प्रधानमंत्री मोदी ने आठ साल में कर दिखाया : अनुराग ठाकुर

भोपाल। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने भारत के ऐतिहासिक चंद्र मिशन चंद्रयान-3 और कई केंद्रीय योजनाओं का जिक्र करते हुए शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आठ साल में जो हासिल किया है, वह उनसे पहले 60 साल में नहीं हो सका। सूचना एवं प्रसारण तथा खेल और युवा मामलों के मंत्री ठाकुर ने कहा, "हम चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंतरिक्ष यान उतारने वाले दुनिया के पहले देश हैं। यह हमारे लिए गौरवशाली क्षण है।" वह यहां प्रधानमंत्री मोदी के चुनिंदा भाषणों के संग्रह पर आधारित दो पुस्तकों 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के विमोचन के लिए आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। ठाकुर ने कहा, "जो 60 वर्षों में नहीं हो सका, वह मोदीजी ने केवल आठ वर्षों में कर दिखाया। चार करोड़ गरीबों को पक्के मकान बनाकर दे दिए। 12 करोड़ बहनों को और परिवारों को शौचालय बनाकर दे दिए। हर गांव तक बिजली पहुंचा दी।" उन्होंने कहा, "मोदीजी ने 80 करोड़ गरीबों को कोविड महामारी के दौरान ढाई साल तक डबल राशन देने का कार्य किया और अब तो 12 करोड़ घरों को नल से जल देने का काम मात्र तीन साल में कर दिया। पिछले नौ साल में आयुष्मान भारत योजना के तहत 60 करोड़ लोगों को पांच लाख रुपये का मुफ्त इलाज देने का काम मोदीजी ने किया है।"

मुजफ्फरनगर के स्कूल में छात्र की पिटाई पर गरमाई सियासत ओवैसी ने साधा सीएम योगी पर निशाना

हैदराबाद। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन लोगों को उचित प्रक्रिया में कोई विश्वास नहीं है। ओवैसी ने शनिवार को उस बच्चे के माता-पिता से बात की, जिसे एक शिक्षक के निर्देश पर दूसरे छात्र ने पीटा था। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में एक निजी स्कूल के एक शिक्षक को एक वायरल वीडियो में कक्षा में बच्चों को एक विशेष समुदाय के अपने सहपाठी को थप्पड़ मारने का निर्देश देते देखा गया। वायरल वीडियो में दिखाया गया है कि बच्चे रोते हुए छात्र को बारी-बारी से मारते हैं और शिक्षक देखते रहते हैं। वीडियो प्रसारित होने के बाद ऑनलाइन आक्रोश फैल गया। असदुद्दीन ओवैसी ने पीड़ित छात्र के पिता से फोन पर बात की और हैदराबाद में उसकी मुफ्त शिक्षा का आश्वासन दिया और कहा कि नफरत फैलाई जा रही है। एक एक्स पर ओवैसी ने लिखा कि ये कौन लोग हैं जो अपने बच्चे के लिए न्याय मांग रहे एक पिता पर माहौल शहराब करेगें? यह योगीआदित्य नाथ के शासन का अभियोग है कि

इस बात की अधिक संभावना है कि शिक्षक को दंडित होने के बजाय कोई सरकारी पुरस्कार मिलेगा। उन्होंने कहा कि किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 75 स्पष्ट है। पुलिस को कार्रवाई क्यों करनी चाहिए। यह आरोप लगाते हुए कि मुजफ्फरनगर का वीडियो 9 वर्षों का उत्पाद है, ओवैसी ने कहा, छोटे बच्चों के दिमाग में यह संदेश डाला जा रहा है कि कोई भी किसी मुस्लिम को बिना किसी नतीजे के मार सकता है और अपमानित कर सकता है। इस बीच, शीर्ष बाल अधिकार निकाय राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने एक वीडियो साझा करके लोगों से लड़के की पहचान उजागर नहीं करने का आग्रह किया है, जिसमें एक शिक्षिका अपने छात्रों से उसे थप्पड़ मारने के लिए कहती नजर आ रही है।

यूपी के हर जिले में होगी साइबर क्राइम थानों की स्थापना: सीएम योगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि साइबर अपराधों पर नकेल कसने के लिए अब राज्य के सभी 75 जिलों में साइबर क्राइम पुलिस थानों की स्थापना की जाएगी। हर थाने में साइबर सेल को सक्रिय किया जाएगा। सीएम योगी ने की साइबर सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा: सीएम योगी ने शनिवार को प्रदेश में साइबर सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि परिश्रम स्तर पर संचालित साइबर क्राइम पुलिस थानों को अब सभी 75 जिलों तक विस्तार दिया जाए और वर्तमान में जिला स्तर पर संचालित साइबर सेल को आगे साइबर पुलिस क्राइम थाने स्थापित किए जाएंगे। तकनीक के दुरुपयोग से अपराध की प्रकृति भी बदली है: समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि हाल के समय में तकनीक के दुरुपयोग से अपराध की प्रकृति भी बदली है। आज कस्टमर केयर फ्रॉन्ट, फैंशन फ्रॉन्ट, बिजली बिल फ्रॉन्ट, वर्क फ्रॉन्ट, बिजली बिल फ्रॉन्ट, वर्क फ्रॉन्ट होम फ्रॉन्ट, सेक्सटॉर्शन फ्रॉन्ट, लोन एप फ्रॉन्ट, पार्सल फ्रॉन्ट, फ्रेंचाइजी फ्रॉन्ट, फेक बेटिंग एप, साइबर क्राइम थानों की स्थापना होगी। जबकि हर थाने में साइबर हेल्प डेस्क के अलावा अब साइबर सेल भी क्रियाशील होगा। सभी

हिन्दी दैनिक बुद्ध का संदेश समाचार पत्र

में सरकारी विज्ञापन, निविदा, अदालती नोटिस, सम्मान, सूचना, टेंडर प्रकाशन के लिए आज ही सम्पर्क करें।

सभी जनपदों से आवश्यकता है पत्रकारों की सम्पादक:- दैनिक बुद्ध का संदेश

8795951917, 9453824459

www.budhakasandesh.com E-Mail ID: budhakasandeshnews@gmail.com

चांद पर जहां उतरा विक्रम, उस जगह को कहा जाएगा शिवशक्ति, बीजेपी को मिला कांग्रेस पर निशाना साधने का मौका

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इसरो के पिछले दो चंद्रमा मिशनों के लैंडिंग स्थल के लिए नामों की घोषणा करने के तुरंत बाद, भाजपा ने सबसे पुरानी पार्टी पर परिवार को पहले रखने का आरोप लगाते हुए कांग्रेस पर हमला बोल दिया। पीएम मोदी ने आज इसरो वैज्ञानिकों से मुलाकात की और इसरो कार्यालय से कई घोषणाएं कीं। पीएम मोदी ने कहा कि जिस स्थान पर चंद्रयान-3 उतरा, उसे शिवशक्ति के नाम से जाना जाएगा, चंद्रयान-2 के प्रभाव स्थल को शतिरंगा कहा जाएगा और तीसरे चंद्र मिशन की सफल लैंडिंग के दिन को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाया जाएगा। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने दिवटर पर कहा, भारत पहले बनाम परिवार पहले! चंद्रमा पर प्रभावलैंडिंग बिंदु के

को विक्रम लैंडर कहा गया। अगर यूपीए होता तो उन्होंने चंद्रयान 2 और 3 कभी नहीं भेजा होता और अगर भेजा होता तो उसका नाम इंदिरा पॉइंट और राजीव पॉइंट रखा होता। बीजेपी नेता सीटी रवि ने कहा, चंद्रयान 1 लैंडिंग स्पॉट, 2008 - जवाहर पॉइंट। चंद्रयान 3 लैंडिंग स्पॉट, 2023 - शिव शक्ति पॉइंट, राजवंश और राष्ट्रवादियों के बीच अंतर।

गौरतलब है कि कांग्रेस सरकार के दौरान चंद्रयान-1 लैंडिंग साइट का नाम रजवाहर प्वाइंट रखा गया था। इसरो के मिशन की सफलता को लेकर पूर्व पीएम इंदिरा गांधी के समय ही पहला स्वदेशी उपग्रह सार्यमइय लॉन्च किया गया था। एक अन्य पोस्ट में कांग्रेस ने कहा कि तत्कालीन पीएम नेहरू के कार्यकाल के दौरान भारत ने अपना पहला रॉकेट लॉन्च किया था।



जलजीवन मिशन में खोदे गये गड्डे में गिरा युवक गंभीर रूप से घायल, नाराज ग्रामीणों ने किया विरोध प्रदर्शन

ग्रामीणों ने जताया विरोध प्रदर्शन मुख्य रास्ते पर खुदाई करने के बाद प्रयाप्त मिट्टी न डालने से रास्ते पर ग्रामीण गिरकर घायल सही कराने की मांग

बृजभूषण तिवारी / दैनिक बुद्ध का सन्देश गोंडा। जिलाधिकारी के सख्त

शिकायत जिला अधिकारी से किया गया कोई कार्रवाई नहीं हो हुई जिससे नाराज ग्रामीणों ने विरोध

रास्ते को पूर्व की भांति न किए जाने के कारण आए दिन ग्रामीण गिर कर घायल हो रहे हैं। ग्राम पंचायत

को डालने के लिए रास्ते की खोदाई किया गया लेकिन रास्ते को पूर्व की भांति सही नहीं कराया गया।



निर्देश के बाद भी जल जीवन मिशन के अंतर्गत क्षेत्र के विभिन्न ग्राम पंचायत में पाइपलाइन बिछाई जाने के लिए मुख्य रास्ते पर खुदाई करने के बाद प्रयाप्त मिट्टी न डालने से रास्ते पर ग्रामीण गिर कर घायल हो रहे हैं। जिसकी प्रदर्शन कर नाराजगी व्यक्त की। मामला विकासखंड रूपईडीह के विभिन्न गांवों में जीवन मिशन के तहत मुख्य सड़क व रास्ते की खुदाई करके पाइप लाइनों को बिछाया जा रहा है लेकिन जिलाधिकारी के आदेश के बावजूद

जमुनहीं हरदोपट्टी, भैरमपुर, महादेव कला, रूपईडीह, असिधा, पचरन, मंगल नगर, पिपरा चौबे, खरगपुर डींगुर, सेवरहा, हिंदूनगर बाकी, तेलिया कोट, नारायण पुर, हरचंदपुर, चौहट्टा, सहित दर्जनों गांवों में जल जीवन मिशन के तहत पाइप लाइनों

जानकारों की माने तो प्रत्येक ग्राम पंचायतों में जल जीवन मिशन के तहत टंकी निर्माण से लेकर अन्य कार्यों के लिए करोड़ों रुपये खर्चा किए जाने का बताया जा रहा है लेकिन आधे अधूरे कार्यों को करके इति किया जा रहा है।

रूपईडीह ब्लॉक के जमुनहीं हरदोपट्टी का युवक गड्डे में गिरकर गंभीर रूप से घायल

जमुनहीं हरदोपट्टी, बड़की जामुनहीं से बावू पुरवा गांव तक खड़जा खुदाई सहित विभिन्न मजूरों में जल जीवन मिशन के तहत रास्ते को खोद कर पाइपलाइन बिछाई गई लेकिन रास्ते को सही नहीं कराया गया जिससे अनजाने में पाइपलाइन गड्डे में ग्रामीण व पशु गिर कर घायल हो चुके हैं जिसको लेकर ग्रामीण संजय मोर गिरधारी लाल विक्रम मिश्रा परमहंस भागीरथ राजेंद्र प्रसाद शिवकुमार जगदेव, रवि कुमार मिश्रा ,आलोक कुमार शुक्ला, घनश्याम शुक्ला, दशरथ प्रजापति, कुलदीप मिश्रा, रामदेव चौरसिया, गिरधारी, मुन्ना शुक्ला, अनूप शुक्ला, पूर्व प्रधान फकीरे लव कुश, गुड्डू मौर्य, षण्ण मोहन, जगदेव, फूलमती कुलदीप आदि लोग न विरोध प्रदर्शन कर कहा कि बुधवार को दिनेश कुमार पुत्र बासुदेव चौरसिया का लड़का पानी के भरे हुए गड्डे में गिर कर घायल हो जिसके दोनों पैर काम नहीं कर रहा जिसे जिला मुख्यालय पर भेजवाया गया जहां पर इलाज चल रहा है। ऐसे कई घटनाएं हो चुकी है इस संबंध में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मंशा राम मिश्रा ने बताया कि इस संबंध में शिकायत जिला अधिकारी से किया गया है लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।



जिले की मंत्री बिंदु मती मिश्रा ने बैठक में बताया कि 2024 में सभी कार्यकर्ता मिलकर फिर से कमल का फूल खिलाना है और साथ में वोटर चेतना अभियान के तहत हम सभी अपने अपने बूथों पर वोटर लिस्ट में नाम बढ़ाया जाय जिनका नाम गलत है ओ भी सही कराया जाय कोई भी व्यक्ति वोटर लिस्ट से वंचित न रह जाय। लोग अब अपने मोबाइल से ही वोटर लिस्ट से नाम बढ़ा सकते हैं बूथों को वोटर लिस्ट में नाम बढ़ाने के लिए फॉर्म भी वितरण किया गया। इस बैठक में मंडल महामंत्री रामदरश त्रिपाठी, जयप्रकाश त्रिपाठी, सत्यप्रकाश, जितेंद्र पांडेय आदि लोग मौजूद रहे।

काली पट्टी बांधकर स्वास्थ्य संविदा कर्मी ने किया काम

दैनिक बुद्ध का सन्देश उसका,सिद्धार्थनगर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उसका बाजार में तैनाद टीबी कंट्रोल एम्प्लाइज व ल फे य र एसोसिएशन से जुड़े स्वास्थ्य संविदा कर्मी ने हाथ में कला पट्टी बांधकर उचूटी कर रहे हैं प्रदेश संगठन के आवाहन पर काला पट्टी बांधकर विरोध जाता रहे है संगठन महामंत्री ने दिग्गज पांडेय ने जानकारी देते हुए कहा कि विभिन्न पदों पर कार्यरत संविदा कर्मचारियों को मूलभूत सुविधाएं दी। पांच वर्ष से लंबित सामूहिक बीमा योजना लागू हो, कर्मचारियों को पंडित केशलेश बीमा योजना का लाभ दिलाया जाए इसको लेकर हम सभी संविदा स्वास्थ्य कर्मी अपने अपने अस्पताल पर हाथ में काला पट्टी बांधकर विरोध जता रहे हैं और साथ में काम कर रहे हैं।

उप्र रानी लक्ष्मी बाई योजना का लाभ दो तीन वर्षों बाद भी नहीं, जिम्मेदार कौन

दैनिक बुद्ध का सन्देश बलरामपुर। जनपद में सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का अक्षरशः पालन सुनिश्चित करने हेतु शासन .त संकल्प है जिसके क्रम में आये दिन मंत्रियों अधिकारियों के बीच समीक्षा बैठक होती रहती है पर इसके बावजूद प्रोवेशन विभाग में रानी लक्ष्मी बाई महिला एव बाल कल्याण सम्मान कोष के अंतर्गत 2-3 वर्षों के बाद भी पीडित बच्चियों को कोई सहायता आर्थिक मदद नहीं मिल सकी बच्चियों के परिवारीजन विभाग का लगातार चक्कर लगाते रहते हैं पर कोई सकारात्मक कार्यवाही नहीं होती बताते चलें कि जनपद के कई गांवों की ऐसी महिलयायें हैं जो आये दिन विकास भवन का चक्कर लगाती रहती हैं इसमें ग्राम पंचायत लखौरा बसंतपुर प्रसादीडीह विकासखंड हरैया सदतघरा गणेशपुर कोडरी व ग्राम पंचायत बालपुर नैनपुर विकासखंड बलरामपुर आदि का है पीडित परिवारों ने अपना नाम उजागर न करने की शर्त पर बताया की हमारी कोई सुनवाही कहीं नहीं होती है और दो-तीन वर्षों से इस विभाग का हम लगातार चक्कर लगा रहे हैं।

विधायक तुलसीपुर ने वायरल वीडियो में अपना नाम अनावश्यक रूप से जोड़ने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया

दैनिक बुद्ध का सन्देश बलरामपुर। जनपद में कानून व्यवस्था की अच्छी स्थिति होने व कुछ साफ सुथरे छवि के विधायक जनप्रतिनिधियों कि किसी भी घटना में सस्ती लोकप्रियता एवं मामले को गंभीर बनाने की नियत से एक माह पुराने घटना को सोशल मीडिया पर डालकर घटना को नया रंग दिया जा रहा है इस संदर्भ में जब स्थानीय विधायक कैलाश नाथ शुक्ल से घटना के बारे में जानकारी ली गयी तो उन्होंने बताया कि इस घटना की दूर-दूर तक मुझे न कोई जानकारी है न ही मेरे परिवार का कोई सदस्य वायरल घटना में शामिल है फिर भी अगर घटना वायरस हुई है तो इसकी निष्पक्ष जांच होगी और उसमें जो भी दोषी होंगे उन पर प्रशासन कड़ी कार्यवाही करेगा परंतु अनावश्यक रूप से किसी का नाम उछालना या घटना से जोड़ना गलत है अगर किसी को कोई शिकायत है तो वह व्यक्ति सीधे मुझसे बात कर सकता हैं।

निबंध प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाली छात्राओं को किया गया पुरस्कृत

दैनिक बुद्ध का सन्देश इटियाथोक,गोंडा। शनिवार को क्षेत्र अंतर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालय मेहनन में जल जीवन मिशन की टीम ने निबंध प्रतियोगिता आयोजित कराई जिसमें जल संचयन व जीवन में महत्व पर कक्षा छह सात व आठ के बच्चों ने प्रतिभाग किया। निबंध प्रतियोगिता में गुराल गर्ल अंशिका मिश्रा अव्वल रही दूसरे स्थान पर नलिजा पाण्डेय व आंचल मिश्रा तीसरे स्थान पर रही। टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर्ता अंशिका मिश्रा की सराहना करते हुए तीन छात्राओं को पुरस्त् किया। इस दौरान विद्यालय की प्रधानाध्यापिका नन्दनी देवी, उद्दृष्ट शिक्षक प्रमोद मिश्रा, अनुदेशक मंजू व जल जीवन मिशन टीम की रेखा पाण्डेय व आदर्श कुमार अवस्थी मौजूद रहे।

डीएम की अध्यक्षता में जनता दर्शन का हुआ आयोजन

प्रत्येक माह के दूसरे एवं चौथे शुक्रवार को शिकायती संदर्भों के निस्तारण हेतु आयोजित किया जाता है विशेष जनता दर्शन

दैनिक बुद्ध का सन्देश संतकबीरनगर। जिलाधिकारी

संदीप कुमार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में लम्बित शिकायती संदर्भों के निस्तारण के संबंध में बैठक आयोजित हुई। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जय प्रकाश उपस्थित रहे। आज आयोजित विशेष समाधान दिवस बैठक में कुल 15 शिकायती संदर्भों से सम्बंधित पक्षाकार भी उपस्थित रहे। जिलाधिकारी ने तहसीलवार प्रकरणों की सुनवाई करते हुए प्रकरण से संबंधित दोनों पक्षों एवं

के उपरान्त सम्बंधित उप जिलाधिकारी /

जमीन पर अवैध कब्जा, चकबंदी सीओ द्वारा सुनवाई व निस्तारण

शिकायतों की सुनवाई सम्बंधित विभागिय

इस अवसर पर उप जिलाधिकारी खलीलाबाद शैलेश दूबे, उप

सेमरियावां प्रियंका तिवारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी महेन्द्र



सक्षम अधिकारियों/राजस्व कर्मचारियों/लेखापाल की उपस्थिति में नियमानुसार निस्तारण के परिणाम का फीडबैक एवं संतुष्टि भी शिकायतकर्ताओं से पूछा। शिकायती संदर्भों से सम्बंधित आज आयोजित निस्तारण बैठक में अवैध कब्जा, रजिस्ट्री के बावजूद भूमि का मालिकाना हक न मिलना, मकान पर कब्जा करने, गड्डे की तहसीलदार/लेखापाल की उपस्थिति में नियमानुसार निस्तारण के परिणाम का फीडबैक एवं संतुष्टि भी शिकायतकर्ताओं से पूछा। शिकायती संदर्भों से सम्बंधित आज आयोजित निस्तारण बैठक में अवैध कब्जा, रजिस्ट्री के बावजूद भूमि का मालिकाना हक न मिलना, मकान पर कब्जा करने, गड्डे की

न किए जाने, विवादित भूमि में हो रहे निर्माण कार्य को रोकवाने, प्रवर्तन दल द्वारा जांच विषयक, विकास कार्यों में अनियमितता की जांच, ग्राम पंचायत में भ्रष्टाचार की जांच, प्रवर्तन दल द्वारा जांच, विकास कार्यों की अनियमितता की जांच, सूची चकबंदी सीओ द्वारा सुनवाई न किये जाने आदि से सम्बंधित

जिलाधिकारी धनघटा उत्कर्ष श्रीवास्तव, उप जिलाधिकारी मेहदावल अरुण वर्मा, अपर उप जिलाधिकारी रमेश चंद्र, तहसीलदार खलीलाबाद जनार्दन, तहसीलदार मेहदावल डॉ सुनील कुमार, तहसीलदार धनघटा योगेश्वर पांडेय, नायब तहसीलदार सदर विजय कुमार गुप्ता, नायब तहसीलदार

कुमार, अधिशाषी अभियन्ता विद्युत् रणधीर कुमार, पीओ डूडा प्रेमेंद्र सिंह, ओएएस030 बलदाक जी शर्मा, ईडीएम राकेश कुमार, सहायक विकास अधिकारी (महिला) नीतू शुक्ला, सूचना अधिकारी सुरेश कुमार सरोज सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारी एवं राजस्व कर्मचारी एवं फरियादी आदि उपस्थित रहे।

घटिया निर्माण से ढही पानी टंकी, उच्च स्तरीय जांच कि मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश बलरामपुर। सरकार आम जनता तक शुद्ध पेयजल उपलब्ध



कराने हेतु करोड़ों रुपये खर्च कर रही है परंतु जनपद में कार्य कर रही कार्यदायी संस्था किस तरह आम जनजीवन से खिलवाड़ कर रही है इसका ताजा उदाहरण जनपद के श्रीदत्तगंज ब्लॉक के ग्राम चुल्हाभारी केवलपूरा का है जहां उक्त योजना का कार्य अंतिम पायदान पर था तथा कार्य पूरा होने के बाद टंकी में पानी भरना शुरू किया गया था इस दौरान पूरी टंकी भर भरा कर गिर गयी इस दौरान वही नीचे कोई मौजूद नहीं था लिहाजा कोई जन नहीं हुई अलबत्ता टंकी के चारों तरफ बनाई गई दीवार को कुछ अंश क्षतिग्रस्त हुए हैं बताते चलें की उक्त कार्यक्रम पूरे जनपद में चल रहा है और इस कार्य दयी संस्था पर किसी जनप्रतिनिधि या संस्था द्वारा आरोप प्रत्यारोप नहीं लगाये गये लेकिन जिस तरह से केवल पूरा चुल्हाभारी में घटना घटित हुई है ऐसे में जनपद के सभी ग्राम पंचायतों में निर्माण धीन टंकियों के गुणवत्ता का भौतिक सत्यापन करने के बाद ही आगे का निर्माण होने दिया जाये व जो टंकियां बन गयी है उनका भी परीक्षण स्थानीय प्रशासन जिम्मेदार अधिकारी काराये अन्यथा गांवों में बनने वाली टंकियों से शुद्ध जल तो बाद में मिलेगा अपितु अप्रत्याशित घटना कभी भी घट सकती है उक्त मांग बलरामपुर विकास मंच के संयोजक घनश्याम मिश्र ने एक लिखित विज्ञापित में दी श्री मिश्र ने स्थानीय जिला प्रशासन एवं जल निगम के जिम्मेदार अधिकारियों से बीना भौतिक सत्यापन करारये किसी भी पानी टंकी का उपयोग जनहित में न कराया जाये साथ ही घटिया निर्माण की उच्च स्तरीय जांच कराई जाये व दोषी कार्यदायी संस्था के खिलाफ मुकदमा पंजीत कर आवश्यक कार्यवाही की जाये अगर ऐसा नहीं हुआ और भविष्य में कोई दुर्घटना घटती है तो उसकी जिम्मेदारी स्थानीय प्रशासन की ही होगी।

स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान में 27 प्रतिभागियों को दिलाया जा रहा है प्रशिक्षण:उप निदेशक कृषि

दैनिक बुद्ध का सन्देश बलरामपुर। प्रशिक्षित .षि

उद्यमी स्वावलम्बन (एग्रीजंक्शन) योजनांतर्गत वित्तीय वर्ष-2023-24 में विकास भवन बलरामपुर में स्थित ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षण का आयोजन कराया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन उप .षि निदेशक, नरेन्द्र कुमार द्वारा किया गया, जिसमें 27 प्रतिभागी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उद्घाटन सत्र में जिला .षि अधिकारी बलरामपुर एवं निदेशक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण

संस्थान बलरामपुर भी उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि इस योजना के माध्यम से षकों को उनके फसल उत्पादों के लिए .षि केन्द्रों (एग्रीजंक्शन) के बैनर तले समस्त सुविधाएं "वन स्टॉप शॉप" के माध्यम से उपलब्ध कराया जायेगा। साथ ही केन्द्रों को अन्तर्गत को रोजगार का अवसर प्राप्त होगा। प्रशिक्षित .षि उद्यमी स्वावलम्बन (एग्रीजंक्शन) को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती है, जिसमें निवेशों पर निर्गत किए जाने वाले लाइसेंस शुल्क की प्रतिपूर्ति

.षि निवेशवार लाइसेंस प्रतिपूर्ति का विवरण, जिसमें बीज लाइसेंस शुल्क हेतु (रुपये 1000/प्रति केन्द्र), उर्वरक लाइसेंस बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रस्तावित शुल्क (रु0 625 प्रति केन्द्र), कीटनाशी रसायन लाइसेंस शहरी क्षेत्रों में प्रस्तावित केन्द्रों हेतु शुल्क (रु0 7500 प्रति केन्द्र) तथा परिसर किराया 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम रु0 12000 (अधिकतम रु0 1000/-प्रतिमाह की दर से केवल प्रथम वर्ष के लिए) व इस योजना के अन्तर्गत एग्रीजंक्शन जिसकी कुल

न्यूनतम लागत रु0 6 लाख है उनको रु0 5 लाख (ऋण सीमा)लाक इन पीरियड"-36 माह(7. 5 प्रतिशत अग्रिम ब्याज अनुदान की धनराशि 03 वर्षों के प्रस्तावित कार्य हेतु इन्डेड ससिडी के रूप में अधिकतम रु0 60000 की सीमा तक दी जाएगी, परन्तु लाभार्थी द्वारा ऋण खाता 03 वर्ष से पूर्व बन्द नहीं किया जायेगा) ऋण स्वीति रुपये 5. 00 लाख से कम होने की दशा में अग्रिम ब्याज अनुदान (बैंक इन्डेड ससिडी) तद्नुसार अनुपातिक रूप से कम होगा।

थाना मुण्डेरवा पुलिस ने दुष्कर्म के अभियुक्त को 24 घण्टे के अन्दर किया गया गिरतार



दैनिक बुद्ध का सन्देश बस्ती। प्रभारी निरीक्षक मुण्डेरवा राम कृष्ण मिश्र मय पुलिस टीम धाना मुण्डेरवा पर पंजीत मु0अ0स0 205/2023 धारा 376 (3) 324 IPC व = पाक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त सचिन पुत्र रामदेव भारतीय को महादेवा चौराहा से 50 मीटर आगे बस्ती रोड से 24 घण्टे के अंदर गिरतार किया गया। गिरतार अभियुक्त का विवरण सचिन पुत्र रामदेव भारतीय ग्राम देवरिया रामपुर थाना मुण्डेरवा जनपद बस्ती उम्र 20 वर्ष।

स्वदेश दर्शन योजना के लिये प्रशासन उत्साहित, किया निरीक्षण

वोटर चेतना अभियान को लेकर बर्डपुर में बैठक सम्पन्न

मंडल अध्यक्ष नितेश पाण्डेय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक



दैनिक बुद्ध का सन्देश सिद्धार्थनगर। जयेंद्र कुमार, मुख्य विकास अधिकारी एवं जिलाधिकारी ने पर्यटन विभाग की स्वदेश दर्शन योजना के अन्तर्गत बुद्धिष्ठ सर्किट के अन्तर्गत कपिलवस्तु का समेकित पर्यटन विकास कार्य की पूर्णता एवं गुणवत्ता का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय तकनीकी समिति के सदस्य जीतेन्द्र प्रताप सिंह, अधिशासी अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग, प्रा0ख0, मनीष सिंह, सहायक

अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग एवं तैयब अंसारी, अवर अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग उपस्थित रहे। जनपद में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विकास खाण्ड-बर्डपुर में ग्राम-कपिलवस्तु में भारत सरकार के स्वदेश दर्शन योजना के अन्तर्गत बौद्ध थीम पार्क का निर्माण कार्य का कार्यदायी संस्था उ0प्र0राजकीय निर्माण निगम गोरखपुर इकाई गोरखपुर द्वारा कराया गया है। बुद्धा थीम पार्क, आर्ट गैलरी, फूड प्लाजा, यात्री



सहायता केन्द्र तथा सामुदायिक शौचालय का निर्माण कार्य कराया गया है। वर्तमान में समस्त कार्य पूर्ण करा दिया गया है। निरीक्षण के समय आर्ट गैलरी, फूड प्लाजा एवं यात्री सहायता केन्द्र निर्माण, परिसर में पार्किंग, कनेक्टिंग रोड, सी0सी0-टी0वी0 कैमरा, थीम पार्क में लाईट साउण्ड शो, प्रोजेक्शन रूम पब्लिक स्टेड आदि कार्य पूर्ण पाया गया। आर्ट गैलरी, फूड प्लाजा सहित सभी भवन में सीलन की समस्या है जिस कारण पेन्ट इत्यादि खराब हो गये हैं। भवन

प्रयोग में न होने के कारण परिसर में गन्दिगी पायी गयी। स्थल विकास का कार्य एवं खिडकियों के शीशे आदि का लगाने के निर्देश दिये गये। भवन हस्तान्तरण से पूर्व अधिशासी अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग को निर्देशित किया गया कि गुणवत्ता तकनीकी रिपोर्ट उपलब्ध करावे, जिससे हस्तान्तरण सम्बन्धी कार्यवाही की जा सके। परिसर की सुरक्षा हेतु निर्मित बाउंड्रीवॉल, गेट निर्माण कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिया गया।

दैनिक बुद्ध का सन्देश बर्डपुर, सिद्धार्थनगर। वोटर चेतना अभियान को लेकर भारतीय जनता पार्टी बर्डपुर मंडल कार्यसमिति समिति की बैठक शनिवार को मण्डल अध्यक्ष नितेश पाण्डेय की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसके मुख्य वक्ता मंडल प्रभारी वरिष्ठ भाजपा नेता सिद्धार्थ पाठक रहे। बैठक के दौरान मंडल प्रभारी सिद्धार्थ पाठक ने वोटर चेतना अभियान को लेकर उपस्थित कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी बताया कि भाजपा का संगठन बूथ केंद्रित आधारित संगठन है, जब हमारा बूथ मजबूत होगा तभी हमारा संगठन मजबूत रहेगा और तभी हम बूथ जीतेंगे। उन्होंने आगामी लोकसभा चुनाव 2024 के स्ट्रिगत संगठन के निर्देशानुसार हम सभी प्रत्येक मतदाता से संपर्क कर मतदाता

सूची में नाम जोड़ने जाने की वही उन्होंने सम्पर्क से समर्थन जाने तथा उसकी डिटेल् सरल रूप पर डाउनलोड करने को कहा। बैठक में बैठक में मंडल अध्यक्ष नितेश पाण्डेय, मुन्नी देवी, विवेक गोस्वामी, चंद्र प्रकाश धर द्विवेदी, अभिषेक कसौदन, श्याम प्रकाश जायसवाल, अंबरीश जायसवाल, सुरेंद्र यादव, मंगलेश शुक्ला, प्रतिमा दुबे, राजेंद्र विश्वकर्मा, अनिरुद्ध विश्वकर्मा, जेपी मोर्य, रामदास साहनी, हरिशंकर तिवारी, लक्ष्मण चौधरी, बिदेस्वरी चौधरी, संतोष उपाध्याय, पवन पाठक, सतीश जायसवाल, वीरू कुमार, रणजीत चौधरी, हेमंत जायसवाल, आशीष गिरी, सीताराम, रामनिवास विश्वकर्मा, मोहन चौधरी, रामबिलास मोर्य, सहित बूथ

अभियान तथा 27 अगस्त को अध्यक्ष शक्ति केंद्र संयोजक शक्ति मन की बात कार्यक्रम को लेकर केंद्र प्रभारी मंडल पदाधिकारी आदि प्रत्येक बूथों पर आयोजित किए मौजूद रहे।



लेदवा विद्यालय परिसर में स्थापित होगा आंतरिक्ष प्रयोगशाला- गोविंद यादव (सीईओ)

लेदवा विद्यालय में व्योमिका स्पेस स्थापित करेगा अंतरिक्ष प्रयोगशाला

दैनिक बुद्ध का सन्देश शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर। इसरो की अपार सफलता के साथ भारत ने पूरे विश्व में परचम लहराया है। मिशन चंद्रयान-3 के सफलता पर भारत के अन्य हिस्सों के साथ-साथ कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय लेदवा ने भी चंद्रयान-3 के चन्द्रमा पर कदम रखने की जश्न में सहभागिता निभाई। जिसकी प्रसन्नता वैज्ञानिकों व नागरिकों द्वारा किया गया। विद्यालय के बच्चों व शिक्षकों के क्रियाकलापों व गतिविधियों से प्रभावित होकर व्योमिका स्पेस के सीईओ गोविंद यादव ने विद्यालय परिसर में आंतरिक्ष प्रयोगशाला

स्थापित करने का घोषणा किया। उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से स्कूल के बच्चों व शिक्षकों तथा ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए कहा कि चंद्रयान-3 की अपार सफलता में विद्यालय ने भी अच्छे ढंग से कार्यक्रम आयोजित कर देश की खुशी में सहभागिता निभाया है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के जन्मदिवस 15 अक्टूबर के दिन विद्यालय में स्पेस लैब का उद्घाटन वैज्ञानिकों व व्योमिका टीम द्वारा किया जाएगा। व्योमिका सी ईओ के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में विद्यालय में स्पेस लैब की स्थापना की



घोषणा को सुनकर छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और ग्रामीणों ने तिरंगा लहराकर उनका अभिवादन किया। विकास खाण्ड शोहरतगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र के ग्राम पंचायत लेदवा में आंतरिक्ष प्रयोगशाला स्थापित कर नए बाल वैज्ञानिकों के कौशल विकास के नये तकनीक, वैज्ञानिक सोच व अन्वेषण से उन्हें आगे बढ़ने के लिए अवसर मिलेगा। स्पेस लैब में इसरो से जुड़े तमाम तथ्यों के साथ-साथ, रॉकेट सैटेलाइट, ग्लोब, टेलिस्कोप, रोबोट, ड्रोन, मानचित्र, ब्रह्मांड, रथ, नक्षत्रशास्त्र आदि मॉडल की स्थापना कर छात्र-छात्राओं को ज्ञानार्जन करने का प्रयास होगा। उत्तर प्रदेश के भारत नेपाल सीमावर्ती जनपद सिद्धार्थ नगर क्षेत्र के कंभोजित उच्च प्राथमिक विद्यालय लेदवा के अलावा आसपास के विद्यालयों के बच्चों को भी नई सीख हासिल करने का मौका मिल सकेगा। इस दौरान एआरपी मुस्तन शेरुल्लाह, प्रभारी प्रधानाध्यापक अमरेश कुमार राकेश कुमार राज, पवन कुमार चौरसिया, मनमोहन, शशि कुमार यादव, सिद्धार्थ कुमार, राकेश कुमार नायक, रेनु मद्देशिया, सरोज श्रीवास्तव, कांस्टेबल बृजेश यादव, प्रसूद शुक्ला आदि लोग सहित छात्रों की मौजूदगी रही।

को ज्ञानार्जन करने का प्रयास होगा। उत्तर प्रदेश के भारत नेपाल सीमावर्ती जनपद सिद्धार्थ नगर क्षेत्र के कंभोजित उच्च प्राथमिक विद्यालय लेदवा के अलावा आसपास के विद्यालयों के बच्चों को भी नई सीख हासिल करने का मौका मिल सकेगा। इस दौरान एआरपी मुस्तन शेरुल्लाह, प्रभारी प्रधानाध्यापक अमरेश कुमार राकेश कुमार राज, पवन कुमार चौरसिया, मनमोहन, शशि कुमार यादव, सिद्धार्थ कुमार, राकेश कुमार नायक, रेनु मद्देशिया, सरोज श्रीवास्तव, कांस्टेबल बृजेश यादव, प्रसूद शुक्ला आदि लोग सहित छात्रों की मौजूदगी रही।



मे प्रवेश को लेकर एसएसबी शक्ति बढ़ा रखी है। दोनों देश के लोगो के आवागमन में नागरिकता, आधार का होना आवश्यक हो गया है। शक्ति के चलते बार्डर पर दोनों देश के नागरिकों का आना जाना कम हो गया है। जिससे दोनों देश के रोटी बेटे के संबंध के साथ रोजी रोटी पर फर्क पड़ा है। जिससे व्यापार पर असर दिखा है। अलीगढ़वा व्यापारी एसएसबी अधिकारी से मुलाकात कर अपनी बात रखी है। उच्च अधिकारियों के विचार पर मामले को संज्ञान में लेने की बात कही गयी है। फिल हाल अभी भी सीमा पर पहचान पत्र देख संदिग्ध पर नजर रख तलाशी ली जा रही है। आने वाने समय में रोटी

बीआरसी जोगिया में खण्ड शिक्षा अधिकारी व प्रधानाध्यापक की मासिक समीक्षा बैठक का हुआ आयोजन निपुण भारत मिशन के लक्ष्य को हासिल कर विद्यालय को निपुण बनाये शिक्षक-बीईओ जोगिया



विद्यालयों को निपुण किया जा सके। इसके साथ साथ परिवार सर्वेक्षण, संकुल डीसीएफ, कन्या सुमंगला, नवोदय विद्यालय के आवेदन की प्रगति आदि बिंदुओं की समीक्षा की गई। बैठक में जिला समन्वयक अमित शुक्ला, करुणापाति/ त्रिपाठी, व ए आर पी अनुपम सिंह प्रमोद त्रिपाठी शशिकांत त्रिपाठी देवेंद्र त्रिपाठी ई प्रधानाध्यापक पंकज राय, मनीष दूबे, जितेंद्र त्रिपाठी, नवरतन चौधरी, रामप्रताप शर्मा, जय प्रकाश यादव, उत्कर्ष श्रीवास्तव, धर्मेश श्रीवास्तव, विजय कुमार, रविंदर सिंह, अनामिका सिंह, पूनम सिंह, कविता मिश्रा, नमिता यादव, सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे।

दैनिक बुद्ध का सन्देश जोगिया, सिद्धार्थनगर। बीआरसी जोगिया के सभागार में खण्ड शिक्षा अधिकारी कुंवर विक्रम पाण्डेय की अध्यक्षता में मासिक समीक्षा बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में विद्यालयों को निपुण बनाने को लेकर विशेष चर्चा हुई जिसमें निपुण विद्यालय कार्योोजना, व शिक्षक संदर्शिका के साप्ताहिक कलेंडर के अनुसार शिक्षण कार्य तथा शिक्षण गतिविधियों के संचालन, व विभिन्न प्रकार की प्रिंट रिच सामग्रियों का कक्षा में उपयोग की चर्चा हुई जिससे बच्चे अपने कक्षा की दक्षता समय से पूर्ण कर सके व ब्लॉक के सभी

रक्षाबंधन पर बस में फ्री यात्रा की सुविधा से महिलाएं खुश

दैनिक बुद्ध का सन्देश उसका, सिद्धार्थनगर। भाई ने कहा कि प्रदेश की बहनों के लिए सरकार की तरफ से रक्षाबंधन का पर्व हमारा मुख्य धरोहर भी है। महिलाओं के लिए सरकार ने मुत बस यात्रा की सुविधा मुहैया कराकर सराहनीय कार्य किया है। त्योहार को मनाने में बहुत सी महिलाओं को राहत मिलती है। नगर क्षेत्र की महुआ निवासी वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता बिंदुमती मिश्रा ने कहा है कि हमारी सरकार महिलाओं, बच्चों, कमजोर एवम निराश्रित लोगों के उत्थान एवम कल्याण के लिए अतिसंवेदनशील है। पिछले कई वर्ष से प्रदेश सरकार द्वारा बहनों को रक्षाबंधन पर यह सौगात दिया जा रहा है। इस बार भी महिलाओं के लिए यात्रा मुत है। इस सुविधा से महिलाएं अपने भाई को रक्षासूत्र बांधने और त्योहार को मनाने आसानी से बिना बस का किराया चुकाए जा सकेंगी।

ने कहा कि प्रदेश की बहनों के लिए सरकार की तरफ से रक्षाबंधन का पर्व हमारा मुख्य धरोहर भी है। महिलाओं के लिए सरकार ने मुत बस यात्रा की सुविधा मुहैया कराकर सराहनीय कार्य किया है। त्योहार को मनाने में बहुत सी महिलाओं को राहत मिलती है। नगर क्षेत्र की महुआ निवासी वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता बिंदुमती मिश्रा ने कहा है कि हमारी सरकार महिलाओं, बच्चों, कमजोर एवम निराश्रित लोगों के उत्थान एवम कल्याण के लिए अतिसंवेदनशील है। पिछले कई वर्ष से प्रदेश सरकार द्वारा बहनों को रक्षाबंधन पर यह सौगात दिया जा रहा है। इस बार भी महिलाओं के लिए यात्रा मुत है। इस सुविधा से महिलाएं अपने भाई को रक्षासूत्र बांधने और त्योहार को मनाने आसानी से बिना बस का किराया चुकाए जा सकेंगी।

रक्षाबंधन का पर्व हमारा मुख्य धरोहर भी है। महिलाओं के लिए सरकार ने मुत बस यात्रा की सुविधा मुहैया कराकर सराहनीय कार्य किया है। त्योहार को मनाने में बहुत सी महिलाओं को राहत मिलती है। नगर क्षेत्र की महुआ निवासी वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता बिंदुमती मिश्रा ने कहा है कि हमारी सरकार महिलाओं, बच्चों, कमजोर एवम निराश्रित लोगों के उत्थान एवम कल्याण के लिए अतिसंवेदनशील है। पिछले कई वर्ष से प्रदेश सरकार द्वारा बहनों को रक्षाबंधन पर यह सौगात दिया जा रहा है। इस बार भी महिलाओं के लिए यात्रा मुत है। इस सुविधा से महिलाएं अपने भाई को रक्षासूत्र बांधने और त्योहार को मनाने आसानी से बिना बस का किराया चुकाए जा सकेंगी।



धुरिया समाज को मिला नेशनल आइकॉन अवॉर्ड, बड़ा जिले का मान

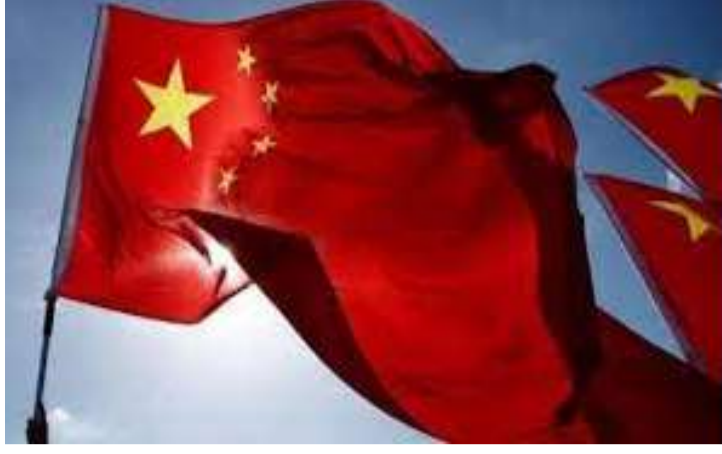
दैनिक बुद्ध का सन्देश सिद्धार्थनगर। राजधानी नई दिल्ली के आदर्श कला केंद्र कमानि ऑडोटेोरियम में 24 अगस्त को आयोजित राष्ट्रीय सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि किरण बेदी, सांसद जगदंबिका पाल लेखा समितिध्यक्ष तथा एक्टर रामायण शो राहुल गुर्जर द्वारा ग्राम तेनुहवा टोला बर्डपुर निवासी बृजेश कुमार धुरिया को काव्य तथा सामाजिक कार्य में किए गए अति उत्कृष्ट कार्य के लिए नई दिल्ली में हिंदुस्तान न्यूज नेटवर्क में सम्मानित किया गया। जिसके लिए आदिवासी विकास सेवा संस्थान जिलाध्यक्ष संतोष कुमार गौड़ ने धुरिया जनजाति समाज के तरफ से बृजेश कुमार धुरिया को उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं दिया साथ ही नवयुवक छात्र छात्राये अपने माता पिता का मान सम्मान अपने कड़ी मेहनत और लगन से पूरा करने को सफल बनाने का प्रयास करें।



सम्पादकीय

इस वजह से भारत की अर्थव्यवस्था पर इसका कम असर होगा। चीन की इस हालत के कई कारण हैं। कोविड काल में दुनिया में सबसे सख्त लक्ष्यकडाउन की तस्वीरें वहां से आईं। वहां की बंदी ने ग्लोबल सप्लाई चेन की कड़ियों को तोड़ दिया। कोविड के बाद आर्थिक सुधार के जिन बड़े फैंसलों की उम्मीद थी, वे नहीं लिए गए। जो ...

चीन की इकॉनमी पर संदेह के बादल उठ रहे हैं। वहां प्रॉपर्टी बाजार संकट से जूझ रहा है। महंगाई दर घट गई है, जो बाजार में डिमांड कम होने का संकेत है। इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट का डेटा कमजोर है। रेकॉर्ड लेवल पर पहुंची बेरोजगारी का डेटा सामने नहीं आने दिया जा रहा है। एनालिस्टों का अनुमान है कि देश स्लोडाउन की ओर बढ़ रहा है। हमारे लिए भी यह चिंता की स्थिति हो सकती है, क्योंकि चीन दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी इकॉनमी है। चीन में स्लोडाउन आया तो यह ग्लोबल डिमांड पर असर डाल सकता है। चीन न सिर्फ दुनिया का मैन्युफैक्चरिंग हब है, बल्कि यह कई चीजों का सबसे बड़ा कंस्यूमर भी है। 2047 में विकसित देश बनने का सपना देख रहे भारत से जितनी उम्मीदें हैं, उतनी करीब 15 साल पहले चीन से थीं। हमारा देश भी मैन्युफैक्चरिंग में चीन का विकल्प बनना चाहता है। मौजूदा हालात में अमेरिका भी चिंतित है। भारत और अमेरिका समेत कई देशों से चीन का तनाव गहराया है। इस बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति के बयान को भी गंभीरता के साथ देखा जा सकता है। उन्होंने हाल में कहा कि चीन की स्थिति टाइम बम जैसी हो गई है। यह अच्छा नहीं है, क्योंकि बुरे लोगों के साथ जब बुरा होता है तो वे बुरे काम ही करते हैं। जिस तरह अमेरिका में लीमैन ब्रदर्स जब 2008 में दिवालिया हुआ तो यह सिर्फ अमेरिका में एक कंपनी में डूबने का मामला नहीं



था। वह दौर ग्लोबल वित्तीय संकट के तौर पर गुजरा था। भारत में भी नौकरियों में कटौती देखी गई थी। अनुमान लगाए जा रहे हैं कि चीन के संकट से वही स्थिति आने का खतरा है। अमेरिका में भी संकट प्रॉपर्टी मार्केट से गंभीर हुआ था, चीन में भी प्रॉपर्टी मार्केट लगातार गिर रहा है। इसका असर दूसरी कंपनियों पर पड़ रहा है। चीन की जीडीपी में रियल एस्टेट का हिस्सा करीब 30 फीसदी है। भारत सरकार भरोसा दिला रही है कि चिंता की जरूरत नहीं है। वित्त सचिव ने हाल में कहा कि चीन के साथ व्यापार के मामले में हमारा घाटा काफी ज्यादा है। यानी हम आयात ज्यादा करते हैं, निर्यात कम। इस वजह से भारत की अर्थव्यवस्था पर इसका कम असर होगा। चीन की इस हालत के कई कारण हैं। कोविड काल में दुनिया में सबसे सख्त लॉकडाउन की तस्वीरें वहां से आईं। वहां की बंदी ने ग्लोबल सप्लाई चेन की कड़ियों को तोड़ दिया। कोविड के बाद आर्थिक सुधार के जिन बड़े फैंसलों की उम्मीद थी, वे नहीं लिए गए। जो फैंसले होते हैं, उनमें पारदर्शिता नहीं होती। कुछ जानकार तो वहां पॉलिशी पैरालिसिस की भी स्थिति देख रहे हैं। चीन को युवा वर्कफोर्स चाहिए, लेकिन वहां बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है। चीन के पास इन बातों का कोई टोस जवाब नहीं है। उसका कहना है कि पश्चिमी देशों के कुछ राजनेता और मीडिया चीन की मामूली समस्याओं को बढ़ा चढ़ाकर दिखा रहे हैं।

थाईलैंड का करतबी नेता थाकसिन!

तभी देखना है कि थाकसेन की पार्टी, जो पहले सबसे लोकप्रिय थी, अपना पुराना समर्थन दुबारा हासिल कर पाएगी या नहीं। या फिर मूव फारवर्ड पार्टी अपने युवा प्रमुख के नेतृत्व में थाईयों के लिए एक नई आशा की किरण बनेगी। कुछ भी हो थाईलैंड की राजनीति, जो पहले अनिश्चिततापूर्ण थी, थाकसिन शिनात्रा की वापसी के अब दिलचस्प हो गई है क्योंकि पहले से बनी हुई विभाजन की स्थिति अब...

श्रुति व्यास

थाकसिन शिनवात्रा उस दौर में थाईलैंड के लोकलुभावन नेता थे जब लोकलुभावन बाटें करने का फैंशन नहीं था। वे एक पुलिस अधिकारी से टेलिकॉम सेक्टर के शहंशाह बने और फिर राजनीतिज्ञ। थाकसिन शिनवात्रा ने एक पार्टी बनाई दृ थाई रेक थाई (थाई लोग थाई लोगों से प्यार करते हैं) दृ और वे बहुत जल्दी गांवों में रहने वाले गरीबों और दबे-कुबलों में लोकप्रिय हो गए। सन् 2001 में उन्होंने एक बड़ी चुनावी जीत के जरिए सत्ता हासिल की। लेकिन 2006 में सेना ने उनका तख्ता पलट दिया और वे देश छोड़कर जाने को मजबूर हो गए। लेकिन उनकी लोकप्रियता कायम रही। थाकसिन का कार्यकाल आर्थिक समृद्धि और बेहतरी के लिए जाना जाता है। उन्होंने ऐसी नीतियां लागू कीं जिनसे ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों का जीवन स्तर बेहतर हुआ। उन्होंने सबके लिए स्वास्थ्य देखभाल योजना लागू की, विकास को प्रोत्साहन देने के लिए गांव के स्तर पर ँन उपलब्ध करवाया और उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली योजनाएं लागू कीं जिनसे देश को एशियाई आर्थिक संकट से उबरने में सहायता मिली। उनके कार्यकाल में ही थाईलैंड आईएमएफ का ऋण तय तारीख से पहले चुकाने में सफल रहा। वे जनता में सबसे अधिक लोकप्रिय थे किन्तु देश के दो प्रमुख सत्ता केन्द्र दृ सेना और राजपरिवार दृ उन्हें नापसंद करते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि वे दिन पर दिन बाटों और राज करों की की पैतरेबाजी करने लगे। थाकसिन और सेना व राज

परिवार में उनके विरोधियों के बीच टकराव हुआ। थाईलैंड एक बंटा हुआ देश बन गया। राजनैतिक उथलपुथल शुरू हुई। उनके कंजरवेटिव आलोचकों ने उन पर भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के आरोप लगाए। उन पर सिद्धांतहीन होने और राजवंश को जरूरी इज्जत न देने का आरोप भी लगा। यह भी कहा गया कि उनसे राजपरिवार की सत्ता को खतरा है। तभी सेना ने दो बार तख्तापलट कर सत्ता कब्जाई। अदालतों ने बार-बार राजनीतिक दलों को भंग किया। कई नेताओं के राजनीति में भाग लेने पर पाबंदी लगा दी गई। लंबे समय तक बैंकाक की सड़कों पर विरोध प्रदर्शन होते रहे।

सेना की कार्यवाहियों में थाकसिन के 90 से अधिक समर्थक मारे गए। थाकसिन को 2006 में हुए तख्तापलट में सेना ने सत्ता से हटाया। फिर वे कानूनी कार्यवाहियों से बचने के लिए 2008 में देश छोड़ बाहर जा बसे। लेकिन देश से बाहर रहने के बावजूद उनका प्रभाव बना रहा। सन् 2001 के बाद हुए हर चुनाव में उनसे जुड़ी पार्टियों ने सबसे ज्यादा सीटों पर जीत हासिल की दृ केवल इस साल हुए चुनाव को छोड़कर, जब लोकतंत्र समर्थक मूव फारवर्ड पार्टी ने सभी को चौंकाते हुए सबसे अधिक वोट हासिल किए। लेकिन जीत के बावजूद सेना की धांधली के चलते मूव फारवर्ड, सरकार नहीं बना सकी। काफी गतिरंजित और अनिश्चितता के दौर के बाद 22 अगस्त को श्रेया थाविसिन, जो प्रॉपर्टी के बड़े व्यवसायी और थाकसिन की फेजु थाई पार्टी के उम्मीदवार

थे, को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। सीधे शब्दों में सेना और थाकसेन की पार्टी के बीच श्साझा सर्वसम्मतिव बनी ताकि नए दौर का प्रतिनिधित्व करने वाली मूव फारवर्ड पार्टी (हालांकि वह फिलहाल मुख्य विपक्षी पार्टी बन गई है) को राजनीति और सत्ता से दूर रखा जा सके। थाकसिन, जो पहले सत्ता प्रतिष्ठान के आलोचक थे, ने दो सबसे बड़े फौजी दलों से गठबंधन कर लिया है। उन्होंने ठीक वही किया है जिसे कभी न करने की कसम फेजु थाई ने खाई थी। 22 अगस्त को ही दृ जिस दिन नए प्रधानमंत्री की नियुक्ति की गई दृ थाकसिन ने 15 साल के निवासन के बाद थाईलैंड की भूमि पर कदम रखा। आते ही उन्होंने पहला काम सम्राट की प्रतिमा के सामने सर झुकाने का किया। उसके बाद उन्हें लंबे समय पहले लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों में गिरफ्तार कर लिया गया, जिसमें उन्हें आठ साल की जेल की सजा सुनाई जा चुकी है। लेकिन अनुमान है कि उन्हें शीघ्र ही सन्न्यात द्वारा क्षमादान दे दिया जाएगा। 78 वर्षीय थाकसिन का कहना है कि वे थाईलैंड इसलिए वापस आए हैं ताकि वे अपने नाती-पेटों के साथ रह सकें। लेकिन नई सरकार के गठन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका, उसके बाद उनका वापस आना, और श्साझा के क्षमादान की अपेक्षा दृ इन सबसे उनकी राजनीति और सत्ता में वापसी के संकेत मिलते हैं। हालांकि थाकसेन को आज भी पहले जितना समर्थन हासिल है, विशेषकर बुजुर्गों और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों का दृ जो विमानतल पर भी

देखा गया, किंतु ऐसे बहुत से लोग हैं जो उनकी अवसरवादिता से नाराज हैं। कुछ समर्थकों का कहना है कि वे समझते हैं कि पिछले तख्तापलट के बाद खड़ी की गई चुनावी बाधाओं से पार पाने के लिए पार्टी का यह करना जरूरी था। दूसरा मत यह है कि यह इस बात का संकेत है कि पार्टी ने अपने लोकतांत्रिक मूल्यांकों को त्याग दिया है, और यह सवाल भी पूछा जा रहा है कि क्या यह कदम थाकसिन के वापस आने के लिए किए गए समझौते का एक हिस्सा है?

लेकिन लोगों को उनकी वापसी से बहुत उम्मीदें हैं। उनका आर्थिक समृद्धि हासिल करने का रिकार्ड है, इसलिए थाईयों को आशा है कि उनकी पार्टी सेना के चंगुल में नहीं फंसेगी और सोच-समझकर, बिना डरे अपने पूरे कार्यकाल तक सरकार चलाएगी। परन्तु एक समस्या यह है कि थाई लोगों के पास अब विकल्प है। मूव फारवर्ड ने युवाओं में काफी लोकप्रियता हासिल कर ली है और वह थाईलैंड का सबसे लोकप्रिय दल बन गया है। तभी देखा है कि थाकसेन की पार्टी, जो पहले सबसे लोकप्रिय थी, अपना पुराना समर्थन दुबारा हासिल कर पाएगी या नहीं। या फिर मूव फारवर्ड पार्टी अपने युवा प्रमुख के नेतृत्व में थाईयों के लिए एक नई आशा की किरण बनेगी। कुछ भी हो थाईलैंड की राजनीति, जो पहले अनिश्चिततापूर्ण थी, थाकसिन शिनात्रा की वापसी के अब दिलचस्प हो गई है क्योंकि पहले से बनी हुई विभाजन की स्थिति अब और अधिक विभाजित होने जा रही है।



लेखक विनय कांत मिश्र / दैनिक बुद्ध का सन्देश

ऐसे कई पशु ढलंगूर, भेड़िए, लोमड़ी आदिभ्र और हैं, जिनकी दिमागी तासीर में मनुष्य मष्तिष्क के तमाम स्वभाव फिट बैठते हैं। मुझे लगता है कि भैंस का मामला भी सटीक है। भैंस की बुद्धि, उसके दिमाग के क्या कहने! वह कभी परिवेश, अनुभव में विचलित होती नहीं दिखती। भैंस के आगे कितनी ही बीन बजाएं, उसके दिमाग में हलचल नहीं होगी। वह भूखी रहे तो भी ज्यादा हल्ला नहीं। उसका बच्चा याकि...

हरिशंकर व्यास

पृथ्वी के आठ अरब लोगों में हम सर्वाधिक संख्या वाले 140 करोड़। जाहिर है मानव सभ्यता की सभी प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि। चेहरे। समझदार और मूर्ख। भयाकुल और निर्भय। भक्त, नियतिवादी तो कर्मयोगी-पुरुषार्थी। सवाल है इन सबके बीच आम समझ कैसी? प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त 2023 के दिन लाल किले से पते की बात कही। उन्होंने देश-दुनिया को याद दिलाया कि भारत हजार साल गुलाम रहा। जबकि पिछले 9-10 सालों से भारत विश्व का प्रकाश पुंज है! अच्छे दिन हैं। अमृत काल में है! आगे के हजार साल के स्वर्णिम भारत के बीज अंकुरित हो रहे हैं। निरुसंधेह नेता यदि सपने नहीं बेचे, जादू नहीं दिखाए तो वह नेता कैसा! इन दिनों दुनिया में सभी तरफ यही होता हुआ है। डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका को श्रेटच बना रहे हैं। पुतिन सोवियत संघ के दिनों का रूस बना रहे हैं। शी जिनफिंग विश्व की दुरी बन रहे हैं। पृथ्वी भले जल रही हो, मानव सभ्यता प्रलय के करीबी के दसियों

लक्षण लिए हुए है लेकिन नरेंद्र मोदी हजार साल की हिंदू गुलामी की याद दिला कर भारतीयों को स्वर्णिम हजार सालदिखला रहे हैं। इसमें मोदी की गलती नहीं है। वे समझदार हैं क्योंकि वे वही कर रहे हैं, जो नस्ल, कौम के दिमाग में हजार साला गुलामी से पकी मूर्खताएं हैं। नौद व सपने में रहने का यदि कौम का स्वभाव है तो मोदी फटे मारों तो यह उनकी गलती नहीं है। जब भक्त प्रजा को सब अच्छा, अमृत काल, विकसित देश, स्वर्णिम देश का सफर समझ आ रहा है, वह कीर्तनरत है तो बेसिक सवाल है कि हम दिमाग में बुद्धि लिए हुए हैं या मूर्खता?

असल बात गुलाम इतिहास है। हमारे हजार साल क्योंकि दासता, चाकरी, भयाकुलता तथा भूख के थे तो अब दिमाग हर उस समय की संतोष, विश्वास तथा भक्ति में जीता है जब अपना राजा सत्तावान होता है। ऐसा नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, वाजपेयी, नरेंद्र मोदी सबके साथ है। जैसे नरेंद्र मोदी विश्व मित्र, प्रकाश पुंज, जी-20 बैठक के नगाड़ों से लोगों को मुध

ा बनाए हुए हैं वैसे पंडित नेहरू की निर्मुट, पंचशील आदि की जुमलेबाजी में भी हम लोगों ने दुनिया में शांति-अमन के कबूतर उड़ते माने थे।

इसलिए प्रधानमंत्री या नेता पर विचार निरर्थक है। असल मसला दिमाग का है? उसमें कितनी मूर्खता या समझदारी है? हजार साल की गुलामी से बनी मनोदशा निश्चित गी पृथ्वी के बाकी लोगों से भिन्न होगी? यों वैश्विक सत्य है कि इंसान ने पृथ्वी पर अपने अलग-अलग बाड़े बना कर सुरक्षा, समृद्धि, विकास के जितने भी जतन किए हैं उनमें उलट वही ठगा गया। मूर्ख बना। उसकी पशु रेवड बन गई। भेड़-बकरी जैसा पालतू हुआ। चतुर लोमडियों, भेड़ियों का शिकार हुआ। मतलब वह न केवल गड़ेरियों पर आश्रित हुआ बल्कि गुलाम बन, इतना मंद बुद्धि हुआ जो यह बोध भी खत्म हुआ कि प्रकृति और ईश्वर ने उसे वह मष्तिष्क दिया है, जिसकी विशिष्टता की वजह से वह भेड़-बकरी, गधे, भैंस, भेड़िए याकि पशु जगत से अलग है।

हां, मनुष्य और उसकी भीड़ का पशुपना

वह संकट है, जिससे मानव इतिहास मूर्खताओं से भरा पड़ा है। इतिहास और परिवेश की अलग-अलग वजह से कम या अधिक मात्रा में मनुष्य दिमाग अपंग होता ही है। लोग न केवल उल्लू बनते हैं, बल्कि पृथ्वी के सर्वाधिक मंद बुद्धि जीवों की तरह व्यवहार करते हैं? इंसानी दिमाग तमाम मूर्खताओं का पिटाटा। कई मायनों में इक्कीसवीं सदी का यह नंबर एक संकट है जो मनुष्य मष्तिष्क एक तरफ आर्टिफिशियल मष्तिष्क, क्वांटम कंप्यूटिंग, अंतरिक्ष को भेदता हुआ है वही दूसरी तरफ लोग ऐसे मूढ़, मंद हुए हैं कि वह सामान्य रियलिटी तक बूझ नहीं पाते। मूर्ख पशु जैसे जीवन गुजारते हैं।

जैसे एक पशु है-कोआला। वैज्ञानिकों के अनुसार ऑस्ट्रेलिया में पेड़ से चिपके रहने वाला यह भालू उर्फ कोआला दुनिया का नंबर एक बेवकूफ, मूर्ख जीव है। इसमें मष्तिष्क है लेकिन वह उसका न्यूनतम उपयोग करता है। वैसे हम भारत में गधे को नंबर एक गधा मानते हैं। असलियत में मूर्ख पशुओं की श्रेणी में गधे का नंबर बहुत बाद में है। कोआला नंबर एक पर है। यह स्तनधारी जीव यूकेलिप्टस खाता है, जिसे बाकी जीव नहीं खाते क्योंकि यह अपाच्छ व जहरीला होता है। लेकिन कोआला यूकेलिप्टस खाने, 20 घंटे सोने, क्लेमाइडिया-ग्रस्त साथी से संभोग से संतान पैदा करने की सनातनी जीवन पद्धति में ढला जीवन जीते हुए चला आ रहा है। वैज्ञानिकों की मानें तो इसके द्वारा दिमाग का न्यूनतम इस्तेमाल ही इस प्रजाति के जीवित रहने की वजह है। दिमाग है लेकिन छोटा। वह सोचने-समझने व पुरुषार्थ की जहमत नहीं उठाता। शायद वह भी यूकेलिप्टस के ऊंचे पेड़ पर चिपके रहते हुए अपने आपको विश्व गुरु, विश्वमित्र मानता हो। वह रियलिटी याकि परिवेश की

हम कितने-कैसे मूर्ख?

सच्चाई नहीं बूझता। मतलब बारिश है तब भी बचाव में छाया में जाने की जहमत नहीं उठाएगा। बारिश में पड़ा रहेगा। आग लगे तब भी लपटों के पहुंचने तक वह पेड़ के भीतर पड़ा रहेगा। उन्हें खाने को यूकेलिप्टस की पत्तियां दें तो वह उसे नहीं खाएगा क्योंकि उसे तो खुद यूकेलिप्टस से चिपके रह कर खाना है। तभी वह शिकारियों का आसान निशाना होता है।

कोआला मूर्ख मष्तिष्क का एक प्रतिमान है। अब गौर करें मूर्खता के अपने पर्याय गधे पर! गधे को क्यों हम मूर्ख मानते हैं? क्या इसलिए क्योंकि वह सीधा और सहनशील होता है? उसे कितना ही मारो, दुत्कारो वह मालिक को छोड़ कर नहीं जाता है। कभी-कभी मालिक से रूठता है। जिद्दी हो जाता है। चलना बंद कर देता है लेकिन मोटा-मोटी वह आदेश पालक होता है। भक्त होता है। उसके लिए दिन-रात खटता है। वह सोचता नहीं है। गधा कितना ही

मूर्खा मरे,

बेरोजगार-आवारा रहे वह कभी गुस्साएगा नहीं। मालिक गधे को कितना ही मारो, उसे खराब राशन-पानी दे और उसे चीन से नहीं रहने दे तब भी गधा नाराज नहीं होगा। असंतोष नहीं दिखाएगा। खूंट छोड़ भागेगा नहीं। उसमें कभी जोश आया मतलब वसंत में उल्लास हुआ तब वह मानों मालिक के तराने गाते हुए। गधा संयमी होता है,

संतुष्ट होता है। दिन-रात मेहनत करता है लेकिन उसे न मेहनत का प्रायोजन मालूम होता होता है और न मेहनत का परिणाम।

सवाल है कोआला और गधे के साथ क्या भेड़-बकरी के दिमाग को रख सकते हैं? मनुष्यों में कोआला और गधे की प्रजाति के दिमागी स्वभाव में मानसिक अपंगता, मूर्खतापूर्ण, मंद आचरण अधिक है या भेड़-बकरी का? हिसाब से मनुष्य भीड़ की हर्ड मनोवृत्ति पर मनोवैज्ञानिकों का अधिक काम है। फिर पृथ्वी की बहुसंख्यक आबादी (चीन, रूस से लेकर तीसरी दुनिया के कई देश) की अनुशासित-पालतू रियलिटी से भी जाहिर है कि भेड़-बकरी की रेवड और गड़ेरियों का आचरण मानव समाज पर अधिक बैठा है। भेड़-बकरी को गड़ेरिया जो कहेगा वह मानेगी। वह जो खिलाएगा भेड़ें खा लेंगी। उससे सुरक्षा का विश्वास दिनचर्या का संतोष है तो जिंदगी को नियति व स्थितप्रज्ञता में जीते जाना है।

चौथे नंबर के लिये परफेक्ट हैं विराट कोहली : एबी डिविलियर्स

दक्षिण अफ्रीका के महान क्रिकेटर एबी डिविलियर्स का मानना है कि विश्व कप में भारत के लिये चौथे नंबर पर विराट कोहली सर्वश्रेष्ठ विकल्प हैं क्योंकि वह मध्यक्रम में हर भूमिका निभाकर पारी के सूत्रधार बन सकते हैं। युवराज सिंह के क्रिकेट से संन्यास के बाद से भारत को चौथे नंबर के लिये सही विकल्प नहीं मिला है। दो महीने बाद भारत में वनडे विश्व कप होना है और इस क्रम को लेकर बहस जारी है।



विराट कोहली ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, "हम अभी भी यह बात कर रहे हैं कि भारत के लिये चौथे नंबर पर कौन

उतरेगा। मैंने सुना है कि विराट उतर सकता है। मैं भी इसका समर्थक हूँ। उन्होंने कहा, "उन्होंने कहा, "हमें पता है कि उसने तीसरे नंबर पर उतरना पसंद है। उसने अपने सारे रन

कोहली ने चौथे नंबर पर भी 39 पारियों में 1767 रन बनाये हैं। वह हालांकि आखिरी बार चौथे नंबर पर जनवरी 2020 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ मुंबई में खेले थे। एशिया कप के लिये लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल को भारतीय टीम से बाहर किये जाने से विराट कोहली ने कहा, "चहल को बाहर किया गया है। चयनकर्ताओं ने संकेत दे दिये हैं कि वे किसे चुनेंगे। मैं इससे निराश हूँ। युजी उम्दा गेंदबाज है और टीम में लेग स्पिनर का विकल्प होना ही चाहिये।

विराट कोहली ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, "हम अभी भी यह बात कर रहे हैं कि भारत के लिये चौथे नंबर पर कौन

उसी क्रम पर बनाये हैं लेकिन आखिर में अगर टीम आपसे कोई विशेष भूमिका चाहती है तो आपको उसे निभाना होता है।"

विराट कोहली ने चौथे नंबर पर भी 39 पारियों में 1767 रन बनाये हैं। वह हालांकि आखिरी बार चौथे नंबर पर जनवरी 2020 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ मुंबई में खेले थे। एशिया कप के लिये लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल को भारतीय टीम से बाहर किये जाने से विराट कोहली ने कहा, "चहल को बाहर किया गया है। चयनकर्ताओं ने संकेत दे दिये हैं कि वे किसे चुनेंगे। मैं इससे निराश हूँ। युजी उम्दा गेंदबाज है और टीम में लेग स्पिनर का विकल्प होना ही चाहिये।

भारतीय कुश्ती महासंघ की सदस्यता समाप्त होने पर सामने आया बृजभूषण सिंह का रिएक्शन, जानें क्या कहा?

विश्व कुश्ती संघ ने भारतीय कुश्ती महासंघ की सदस्यता को

फैसला भारतीय कुश्ती संघ के चुनाव नहीं होने के कारण लिया

पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह ने इसे देश के लिए सबसे

बड़ा आघात बताया है। उनका



24 अगस्त को समाप्त कर दिया। विश्व कुश्ती संघ के इस फैसले ने भारतीय पहलवानों के लिए मुश्किल खड़ी कर दी है। इसके कारण भारतीय पहलवान देश के झंडे के नीचे हिस्सा नहीं ले सकेंगे। विश्व कुश्ती संघ ने ये

है। वहीं 16 सितंबर से होने वाली विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में भारतीय कुश्ती खिलाड़ियों को ओलंपिक क्वालिफाइंग विश्व चैंपियनशिप में न्यूट्रल एथलीट के तौर पर हिस्सा लेना होगा। भारतीय कुश्ती महासंघ के

45 दिनों के अंदर चुनाव न होने के कारण भारतीय खिलाड़ियों को इस स्थिति से गुजरना पड़ा। वहीं इस पर बृजभूषण शरण

संघ को भंग किया है। ये बहुत बड़ा आघात है और मैं यही प्रार्थना करूंगा कि देश जल्दी ही इस आघात से बाहर निकले।

दो साल में पहली बार अमेरिकी ओपन खेलेंगे जोकोविच पर, नजरें रिकॉर्ड पर

नोवाक जोकोविच दो साल में पहली बार अमेरिकी ओपन खेलने पहुंच गए हैं और उनकी नजरें रिकॉर्ड 24वें ग्रैंडस्लैम



खिताब पर लगी होगी। पिछले साल कोरोना का टीका नहीं लगवाने के कारण उन्हें अमेरिका में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली थी। वह कैलिफोर्निया और फ्लोरिडा में भी टूर्नामेंट नहीं खेल सके थे। उन्होंने सोमवार से शुरु हो रहे टूर्नामेंट के लिये यहां पहुंचने के बाद कहा, "मुझे गुस्सा नहीं आया था। पिछले साल अमेरिकी ओपन के दौरान मलाल जरूर हुआ था कि मैं यहां क्यों नहीं हूँ। मुझे नहीं खेल पाने का दुख था। लेकिन अब मैं यहां हूँ और बीती बातों के बारे में नहीं सोच रहा। मेरा फोकस इस टूर्नामेंट पर है। पिछली बार 2021 में वह अमेरिकी ओपन फाइनल में दानिल मेदवेदेव से हार गए थे। जोकोविच पुरुष टेनिस में सबसे ज्यादा 23 ग्रैंडस्लैम एकल खिताब जीत चुके हैं लेकिन अगर वह यहां जीतते हैं तो ओपन युग में सबसे अधिक 24 खिताब जीतने वाली सेरेना विलियम्स को पीछे छोड़ देंगे।

अमेरिका और ताइवान के बीच हुआ हथियारों का सौदा, तिलमिलाए चीन ने उड़ा दिए लड़ाकू विमान, पोत तैनात करके चारों ओर से घेरा ?

बीजिंग। ताइवान और चीन की लड़ाई आज की नहीं बल्कि बहुत पुरानी है। चीन के दखल से स्वतंत्र होने के लिए ताइवान लंबे समय से संघर्ष कर रहा है। आधी दुनिया ताइवान को स्वतंत्र देश मानती है लेकिन चीन इस अपना हिस्सा बताता है। चीन ताइवान के लेकर तब बेहद खफा हो जाता है जब ताइवान में



अमेरिका का दखल बढ़ता है। हाल ही में अमेरिका और ताइवान के बीच हथियारों का सौदा हुआ जिससे चीन एक बार ताइवान पर फिर भड़क गया। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने 26 अगस्त की सुबह कहा कि पिछले 24 घंटों में, उसने द्वीप के वायु रक्षा क्षेत्र में प्रवेश करने वाले 20 चीनी वायु सेना के विमानों का पता लगाया है, जिसमें ताइवान के प्रशांत पूर्वी तट पर उड़ाया गया एक लड़ाकू ज़ोन भी शामिल है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि अमेरिका की ओर से ताइवान को 50 करोड़ अमेरिकी डॉलर के हथियारों की बिक्री को मंजूरी मिलने के कुछ दिन बाद चीन ने द्वीप की ओर अपने दर्जनों विमान और जहाज भेजे हैं। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि शुक्रवार सुबह छह बजे से शनिवार सुबह छह बजे के बीच 24 घंटे की अवधि में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के 32 विमानों और नौसेना के नौ जहाजों देखा गया। ताइवान की सेना ने बताया कि इनमें से 20 विमानों ने ताइवान जलडमरूमध्य की मध्य रेखा को पार किया या ताइवान के वायु रक्षा क्षेत्र में घुस गए और इसके जवाब में ताइवान ने अपने विमान, जहाजों और मिसाइल को भी तैनात कर दिया। चीन स्वशासित ताइवान को एक विद्रोही प्रांत मानता है। पिछले साल भी चीन ने ताइवान की राजनीतिक गतिविधियों की प्रतिक्रिया में द्वीप के चारों ओर सैन्य अभ्यास बढ़ा दिया था। इतना ही नहीं, पिछले सप्ताह ताइवान के उपराष्ट्रपति के पराग्वे के रास्ते में अमेरिका में रुकने के बाद भी चीन की सेना ने 'कड़ी चेतावनी' के रूप में द्वीप के आसपास सैन्य अभ्यास शुरू किया था। चीनी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता झांग जियाओगंग ने शुक्रवार को कहा था कि चीन हथियारों की बिक्री की इस मंजूरी का विरोध करता है और यह चीन के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप है।

वनडे वर्ल्ड कप 2023 टिकटों की बिक्री के पहले ही दिन मची मारामारी, वेबसाइट हुई क्रैश

वनडे वर्ल्ड कप 2023 इस साल का सबसे बड़ा टूर्नामेंट होने जा रहा है। वहीं पहली बार भारत इस बड़े इवेंट का आयोजन अकेले ही कर रहा है। वनडे वर्ल्ड कप के लिए टिकटों की बिक्री शुक्रवार से शुरू हो गई लेकिन आधिकारिक वेबसाइट 35 से 40 मिनट तक काम नहीं करने के कारण क्रिकेट फैंस को टिकट बुक करने में काफी परेशानी झेलनी पड़ी। टिकटों की बिक्री काफी देर से शुरू हुई। पहले ही दिन बिक्री उन मैचों की थी जिसमें भारत नहीं खेल रहा है। हालांकि, ये प्रक्रिया स्थानीय



फैंस ने बुक माई शो एप के क्रैश

ने काम करना शुरू कर दि

शिकायत की कि, साइट क्रैश हो

समय उनका डिवाइस हँग हो

से रात 8 बजे से मिलने शुरू

सिंगापुर में सरकारी अधिकारी पर हमला करने के मामले में भारतीय मूल की महिला को कारावास की सजा

सिंगापुर। सिंगापुर में भारतीय मूल की 58 वर्षीय एक महिला को एक सरकारी अधिकारी पर हमला करने के मामले में कारावास की सजा सुनाई गई है। महिला का पुत्र देश में युवकों के लिए अनिवार्य राष्ट्रीय सेवा का लिए उपस्थित नहीं हुआ था, जिसके कारण अधिकारी उसके घर गया था। के. शांति कृष्णासामी को सरकारी कर्मचारी को जानबूझकर चोट पहुंचाने और उस पर आपराधिक बल का उपयोग करने के मामले में दोषी ठहराया गया। महिला ने उसके पुत्र के राष्ट्रीय सेवा (एनएस) के लिए नहीं उपस्थित नहीं होने पर उनके

घर आए सेंट्रल मैनपावर बेस(सीएमपीबी) के भर्ती निरीक्षक अपनी आवाज ऊंची करनी पड़ी। न्यायाधीश ने कृष्णासामी के ल ग अ ट आ क व्यवहार का भी जिक्र किया, जो कैमरा फुटेज से स्पष्ट नजर आ रहा है। अदालतों के अभिलेख के अनुसार, शांति ने अपनी सजा के खिलाफ अपील की है। उप सरकारी अभियोजक कॉलिन एनजी ने बताया कि कृष्णासामी का पुत्र कविसारांग शिन 23 अप्रैल, 2021 की सुबह पुलाऊ (द्वीप) टेकॉग में 'बेसिक मिलिट्री ट्रेनिंग सेंटर' में भर्ती के लिए नहीं पहुंचा था।

पर हमला कर दिया था। भारतीय मूल की महिला को शुक्रवार को 18 सप्ताह जेल की सजा सुनाई गई। 'द स्ट्रेट्स टाइम्स' अखबार की एक रिपोर्ट के अनुसार, जब जिला न्यायाधीश क्रिस्टोफर गोह सजा का कारण बता रहे थे तो कृष्णासामी ने कई बार उन्हें बाधित किया, जिसके कारण

उन्होंने कहा, "हमें पता है कि उसने तीसरे नंबर पर उतरना पसंद है। उसने अपने सारे रन कोहली ने चौथे नंबर पर भी 39 पारियों में 1767 रन बनाये हैं। वह हालांकि आखिरी बार चौथे नंबर पर जनवरी 2020 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ मुंबई में खेले थे। एशिया कप के लिये लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल को भारतीय टीम से बाहर किये जाने से विराट कोहली ने कहा, "चहल को बाहर किया गया है। चयनकर्ताओं ने संकेत दे दिये हैं कि वे किसे चुनेंगे। मैं इससे निराश हूँ। युजी उम्दा गेंदबाज है और टीम में लेग स्पिनर का विकल्प होना ही चाहिये।

Indian Ocean Island Games के उद्घाटन समारोह में बड़ा हादसा, Madagascar Stadium में मची भगदड़, 12 की हुई मौत

अंतानानारिवो। मेडागास्कर के स्टेडियम में शुक्रवार को हिंद

प्रधानमंत्री क्रिश्चियन नत्से ने मृतक संख्या की पुष्टि की है।



महासागर द्वीप खेलों के उद्घाटन समारोह के दौरान भगदड़ मचने से कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई। स्थानीय मीडिया की खबरों में यह जानकारी दी गई। खबरों के अनुसार, देश के

उन्होंने बताया कि भगदड़ में करीब 80 लोग घायल हुए, जिनमें 11 की हालत काफी गंभीर है। खबरों में बताया गया कि मेडागास्कर की राजधानी अंतानानारिवो के महामासीना

स्टेडियम में आयोजित उद्घाटन समारोह में शामिल होने पहुंचे देश के राष्ट्रपति एंड्री राजोएलिना ने हादसे पर दुख प्रकट किया और स्टेडियम में मौजूद लोगों से जान गंवाने वालों के लिए कुछ पल का मौन रखने की अपील की। करीब 41,000 लोगों की क्षमता वाले इस स्टेडियम में पहले भी इस तरह के हादसे हो चुके हैं। इससे पहले 2019 में एक संगीत कार्यक्रम के दौरान मची भगदड़ में 15 लोगों की मौत हो गई थी। हिंद महासागर द्वीप खेल में कई तरह के खेलों का आयोजन होता है, जिनमें क्षेत्र के कई देश भाग लेते हैं।

चीन के होते हुए भी पाकिस्तान को नहीं मिली ब्रिक्स समूह में एंट्री, अब सफाई में कह रहा ये बात

ब्रिक्स द्वारा समूह में शामिल होने के लिए छह देशों को निमंत्रण देने और इस्लामाबाद को नजरअंदाज करने के बाद, पाकिस्तान ने उपेक्षा को कम करने का प्रयास किया और कहा कि उसने इस समूह का हिस्सा बनने के लिए कोई औपचारिक अनुरोध नहीं किया था। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के अनुसार, प्रवक्ता मुमताज जहरा बलूच ने शुक्रवार (25 अगस्त) को कहा कि उनका देश ब्रिक्स के साथ भविष्य के संबंधों की जांच करेगा और निर्णय लेगा। ब्रिक्स ने दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में अपने शिखर सम्मेलन में घोषणा की कि उसने छह देशों - ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, अर्जेंटीना,

इथियोपिया और मिस्र को समूह का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया है। नहीं किया औपचारिक अनुरोध: नई सदस्यता अगले साल 1 जनवरी से प्रभावी होगी। इसकी घोषणा दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की जोहान्सबर्ग घोषणा जारी करते हुए की। मुमताज जहरा बलूच ने कहा कि हमने जोहान्सबर्ग में ब्रिक्स से संबंधित घटनाक्रम पर नजर रखी है। हमने समावेशी बहुपक्षवाद के प्रति इसके खुलेपन को भी नोट किया है। पाकिस्तान पहले भी कई बार कह चुका है कि वह समावेशी बहुपक्षवाद का प्रबल समर्थक है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने ब्रिक्स में शामिल होने के लिए कोई

औपचारिक अनुरोध नहीं किया बहुपक्षवाद का प्रबल समर्थक है। चंद्रयान-3 पर भी बयान: और कई बहुपक्षीय संगठनों के सदस्य के रूप में उसने हमेशा वैश्विक शांति और विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

है। हम नवीनतम घटनाक्रमों की जांच करेंगे और ब्रिक्स के साथ अपने भविष्य के जुड़ाव के बारे में निर्णय लेंगे। पाकिस्तान

उन्होंने दावा किया कि पाकिस्तान एक प्महत्वपूर्ण विकासशील देश है जिसने दक्षिण के देशों के बीच शांति

और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कई योगदान दिए हैं। उन्होंने कहा, प्मह अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भावना को बढ़ावा देने और समावेशी बहुपक्षवाद को पुनर्जीवित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपने प्रयास जारी रखेंगे। चंद्रयान-3 के 23 अगस्त को चंद्रमा के दक्षिणी इलाके में ऐतिहासिक लैंडिंग के बाद भारत के चंद्र मिशन में सफलता पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पाकिस्तान विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि इसरो वैज्ञानिक सराहना के पात्र हैं। उन्होंने कहा, प्म केवल यह कह सकती हैं कि यह एक महान वैज्ञानिक उपलब्धि है, जिसके लिए इसरो वैज्ञानिक सराहना के पात्र हैं।



चौकीदार ने महिला के साथ की छेड़खानी, केस दर्ज

सलेमपुर। कोतवाली में तेनात एक चौकीदार के खिलाफ महिला से छेड़खानी करने के मामले में केस दर्ज किया गया है। हाल ही में आरोपित चौकीदार तमंचा और कारतूस के साथ जेल भेजा गया था। कुछ दिन पूर्व जमानत मिलने के बाद घर आया था। आरोप है कि थाने के चौकीदार के रौब में अक्सर किसी न किसी विवाद में शामिल रहता है। कोतवाली थाना क्षेत्र के एक गांव की एक महिला की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने एक चौकीदार के खिलाफ छेड़खानी का केस दर्ज किया है। पीड़ित महिला का आरोप है कि गांव में अगल अलग खेत है। खेती बारी व पशुओं के चारा के लिए खेत पर जाना पड़ता है। कुछ दिन पूर्व महिला को अकेला देकर चौकीदार हाथ पकड़कर छेड़खानी तथा जबरदस्ती करने लगा। शोर मचाने पर लोग इकट्ठा हुए तो छोड़कर भाग गया और पीड़िता और उसके पति को जान से मारने की धमकी देता रहा। पीड़ित महिला ने जब इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी। चौकीदार हाथ में कट्टा लेकर लहराते हुए उड़ा धमका चुका है। मामले को गंभीरता से लेते हुए कोतवाली पुलिस ने चौकीदार अरविंद कुशवाहा के खिलाफ केस दर्ज कर आरोपित चौकीदार की तलाश शुरु कर दी है। कुछ दिन पहले चौकीदार को सलेमपुर-नवलपुर मार्ग पर कस्बा सलेमपुर गांव के पास सड़क किनारे तमंचा और कारतूस के साथ अचेतावस्था में पड़ा था। इसमें जेल भी भेजा गया था।

निर्माण में सुस्ती बरतने वाले दो एक्सईएन को कारण बताओ नोटिस

देवरिया। मुख्य विकास अधिकारी रवींद्र कुमार ने 50 लाख से अधिक लागत की परियोजनाओं की समीक्षा की। निर्माण की प्रगति खराब मिलने पर परियोजना प्रबंधक उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम व अधिशासी अभियंता उत्तर प्रदेश पुलिस आवास निगम लिमिटेड को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। बरियारपुर में नवीन पुलिस थाना के आवासीय भवनों के निर्माण 30 अगस्त तक पूरा करने के निर्देश दिए गए। अहिल्यापुर स्थित दुर्गा मंदिर के सौंदर्यीकरण व पर्यटन विकास की प्रगति अत्यंत धीमी मिली। महर्षि देवरहा बाबा स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय के अपूर्ण कार्यों को पूरा न करा पाने के कारण परियोजना प्रबंधक उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम को स्पष्टीकरण जारी किया गया।

एनसीसी कैडेटों को निशानेबाजी, अग्नि के प्रकार व उसे बुझाने के बताये तरीके

दैनिक बुद्ध का संदेश इटियाथोक,गोंडा। कस्बे के श्रीराम तीर्थ स्मारक महाविद्यालय इटियाथोक में चल रहे एनसीसी के संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के चौथे दिन शनिवार को फायरिंग व ड्रिल का अभ्यास कराया गया। इस दौरान द्वितीय सेशन में अग्निशमन विभाग द्वारा आग लगने पर होने वाली जन हानि से बचाव के तरीके बताये गए। शनिवार को शिविर का शुभारंभ प्रातःकालीन योगाभ्यास से हुआ। बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल अरविंद प्रताप सिंह पटवाल ने बताया कि कैम्प में आये हुए कैडेटों को अल्फा, ब्रेवो, चार्ली, डेल्टा, एको व फॉकसेट कंपनी में बांटा गया है। अलग अलग कंपनी के कैडेटों। फायरिंग, एफ सी बी सी,कम्युनिकेशन, मैप रीडिंग, ड्रिल आदि की प्रशिक्षण दी जाती है। फायरिंग के दौरान जहां कैडेटों को लक्ष्य को साधकर व मजबूत पकड़ के साथ निशानेबाजी का अभ्यास कराया गया। वहीं एफ सी बी सी के दौरान युद्ध के दौरान प्रयुक्त होने वाली जमीनी कला व युद्ध कला का अभ्यास कराया गया। द्वितीय सेशन में फायर विभाग गोण्डा के अग्निशमन अधिकारी राम चरित्र तिवारी ने कैडेटों को अग्नि के प्रकार,व उसे बुझाने के तरीके बताए। उन्होंने बताया कि गर्मी, ईंधन व ऑक्सीजन से ही आग फैलती है और उन पर किस प्रकार नियंत्रण पाया जा सकता है इसकी विधिवत जानकारी दी। कई कैडेटों को गैस में आग लगने पर बुझाने के सही विधि से अवगत कराया तथा उसका डेमोंस्ट्रेशन भी किया। इस अवसर पर मेजर अजय मिश्र, लेटिनेंट (डी) देवेन्द्र कुमार चौहान, सुबेदार मेजर राम निवास, आनरी लेटिनेंट गुनरैल सिंह, सुबेदार जयकार सिंह, सुबेदार सुखविंदर सिंह,एन सी सी अधिकारी धीरज कुमार, पुनीत कुमार, बृजेश कुमार व ज्ञानेंद्र त्रिपाठी सहित पी आई स्टाफ आदि मौजूद रहे।

परिषदीय विद्यालय का बढ़ाया मान चयनित हुआ अग्नि वीर

दैनिक बुद्ध का संदेश कहोबा चौराहा,गोंडा। कंपोजिट विद्यालय भरहापारा में अध्यनरत रहे पूर्व छात्र आकाश सिंह का सम्मान समारोह



कंपोजिट विद्यालय भरहापारा के स्टाफ द्वारा शिक्षक संगठन प्रतिनिधियों खंड शिक्षा अधिकारी वजीरगंज ग्राम प्रधान भरहापारा ग्राम सभा के सम्मानित अभिभावकों व छात्रों की उपस्थिति में आयोजित किया गया।छात्र आकाश सिंह पूर्व में कंपोजिट विद्यालय भरहापारा का होनहार छात्र रहा है। उसका वर्तमान में केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही अग्नि वीर योजना में सैनिक के पद पर चयन हुआ है। उसकी इस उपलब्धि पर खंड शिक्षा अधिकारी वजीरगंज हर्षित पांडे अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ सुशील मिश्रा ए आरपी घनश्याम मौर्य संजय कुमार रवींद्र शुक्ला विद्यालय प्रधानाध्यापक नूर मोहम्मद सोनिया सिंह निशा, नीता सिंह बृजपाल संदीप शुक्ला ग्राम प्रधान अवधेश गोस्वामी अवनीश पांडे अमर बहादुर सिंह अनुराग त्रिपाठी शिवकुमार नंदकुमार मिश्रा आशीष द्विवेदी आशुतोष पांडे ने छात्र के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी।

सीडीओ की जांच में अनुपस्थित मिले 34 ब्लॉक कर्मि, एक दिन का वेतन बाधित

अनुपस्थित कर्मिकों के साथ संबंधित बीडीओ से मांगा गया स्पष्टीकरण

देवरिया। मुख्य विकास अधिाकारी रवींद्र कुमार ने . सुबह 10.47 बजे सभी ब्लॉकों से व्हाट्सअप के माध्यम से उपस्थिति पंजिका मंगाकर कर्मचारियों की उपस्थिति की जांच की। इस दौरान विकास खंडवार 34 अधिकारीधर्मचारी अनुपस्थित पाए गए। सीडीओ अनुपस्थित कर्मिकों का एक दिन का वेतनध्मानदेय बाधित करते हुए संबंधित खंड विकास अधिाकारी से पांच दिन में स्पष्टीकरण मांगा है। उन्होंने कहा कि बार-बार उपस्थिति पंजिका के निरीक्षण के दौरान भारी संख्या में ब्लाक स्तरीय कर्मचारियों का अनुपस्थित पाया जाना खंड विकास अधिकारियों की

उदासीनता का परिचायक है। इनका अधीनस्थ कर्मचारियों पर नियंत्रण नहीं है। बीडीओ से जवाब मांगा गया है कि इसके पूर्व निरीक्षण में कौन-कौन से अधिाकारी- कर्मचारी अनुपस्थित मिले थे। उनके विरुद्ध क्या कार्रवाई की गई है।

ये अधिकारी-कर्मचारी मिले अनुपस्थित: भाटपाररानी ब्लाक के टीए व्यास नाथ राय, भटनी के टीए वृजेश सिंह व कमलेश भारती, सलेमपुर वरिष्ठ सहायक सुरेंद्र कुमार गौतम, मनोज यादव, बीटी अभय करण यादव, टीए श्रुतिदेव तिवारी, सुधाकर पांडेय, अरुण शर्मा, अरुण कुमार तिवारी, अमरजीत, बनकटा ब्लाक के टीए शैलेश शर्मा, आनंद प्रकाश गुप्ता,

वरिष्ठ सहायक चंद्र प्रकाश सिंह, भलुअनी के टीए रामचंद्र यादव, पथरदेवा के टीए शिवाकांत मणि त्रिपाठी, रामपुर कारखाना के एपीओ निमित्त सिंह, टीए सुनील नाथ तिवारी, सिद्धेश्वर प्रसाद गुप्ता, बीएमएम दीपमाला, राम नारायण, अभिषेक कुमार उपाध्याय, बीटीए प्रेम प्रकाश तिवारी, भागलपुर के बीएमएम विकास कुमार मिश्र, टीए संतोष पांडेय, सहायक विकास अधिकारी पंचायत धीरेंद्र सागर, देसही देवरिया ब्लॉक के लेखाकार रघुनाथ यादव, ब्लॉक बरहज से टीए सुरेश चंद्र शर्मा, एडीओ एजी देवेन्द्र आनंद सिंह, रुद्रपुर के टीए दीपचंद गुप्ता, शिवदत्त यादव, सुरेंद्र प्रसाद और सतीश सिंह अनुपस्थित पाए गए।

झांसा देकर रुपये हड़पने वाली कई धनाढ्य परिवारों को बनाया है निशाना

देवरिया। शहर के धनाढ्य परिवारों में गहरी पैठ बनाकर महिला ठग प्रॉपर्टी में निवेश कराने के नाम पर रुपये लेती थी। पकड़े जाने के बाद उसने पुलिस को कई ऐसे लोगों के नाम बताएं हैं, जिनके उसके साटगांठ है। पुलिस पर लोग रुपये वापसी कराने का दबाव बना रहे हैं। उसने गोरखपुर और लखनऊ में भी कुछ लोगों से जमीन दिलाने के नाम पर रुपये लिए हैं। देर रात 40 लोगों से 6.50 करोड़ की ठगी का मामला सामने आने पर महिला से पुलिस ने कई राज उगलवाए हैं। ठगी के शिकार हुए कई बड़े लोग पुलिस से यह गुहार लगा रहे हैं

कि केस दर्ज करने से पहले उनके रुपये के वापस करा दिए जाए, महिला के खाते में करीब साढ़े तीन करोड़ एवं एक अन्य महिला के खाते में भी करीब इतनी रकम है। आरोपी महिला ने ऐसी गहरी पैठ शहर में बनाई कि लोग उसके जाल में फंसते चले गए। इसने देवरिया-सलेमपुर मार्ग पर भी जमीन ले रखी है। जमीन के नाम पर तीन लोगों से करीब 50 लाख रुपये ली है। विदेश में नौकरी करने वाले एक व्यक्ति की पत्नी भटवलिया मुहल्ले में रहती थी। जमीन दिलाने के नाम पर पुलिस ने इनसे भी रुपये लिए

हैं। गैर प्रांत में सरकारी नौकरी करने वाले एक व्यक्ति का परिवार शहर में किराए का कमरा लेकर रहता है। इससे कुछ दूरी पर आरोपी महिला रहती थी। दोस्ती कर जमीन दिलाने के नाम पर 15 लाख रुपये ले ली। एक बड़े व्यापारी को शो रूम के लिए जमीन खरीदवाने के नाम पर रुपये ऐंट ली। आरोपी महिला को जब लगा कि जब उसे लोग ढूँढ रहे हैं तो वह ठिकाना बदलती रही। कभी देवरिया खास, कभी भटवलिया तो कभी गोरखपुर रहने लगी। इस दौरान लखनऊ और गोरखपुर के कुछ बड़े लोगों से उसके संबंध हो गए और वह

मेडिकल कॉलेज : एमबीबीएस प्रथम वर्ष में 97 छात्रों ने लिया दाखिला

देवरिया। महर्षि देवरहा बाबा मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस प्रथम वर्ष में अब तक 97 छात्रों ने प्रवेश लिया है। दूसरे राउंड की काउंसिलिंग के बाद आल इंडिया कोटे से दो सीट अभी रिक्त है। प्रवेश अभी तीन दिन चलेगा। दो छात्रों ने दाखिला लिया। इसके बाद प्रदेश के कोटे से प्रवेश होगा। अब तक ऑल इंडिया कोटे से राजस्थान, दिल्ली सहित प्रदेश के बरेली, गाजियाबाद के छात्रों ने दाखिला लिया है। मेडिकल कॉलेज में प्रथम वर्ष में सौ सीटें हैं, जिसमें 15 सीट ऑल इंडिया तथा प्रदेश के कोटे की 85 सीटें हैं। प्रथम राउंड की काउंसिलिंग के बाद कुछ अब तक 97 छात्रों ने प्रवेश लिया है। आल इंडिया कोटे का

को मेडिसिन, सर्जरी, नेत्र, ईएनटी, साइक्रोट्रिक, एक्स-रे, ब्लड आदि की जांच करानी पड़ रही है। नोडल अधिकारी डॉ. जमाल हैदर ने छात्रों के परिजनों से बात कर जानकारी दी। आल इंडिया कोटे के जनरल व ओबीसी छात्रों का 36 हजार रुपये व एससीएसटी वर्ग के छात्रों का 27 हजार रुपये शुल्क है। जबकि प्रदेश कोटे के जनरल छात्रा का 36 हजार तथा ओबीसी, एससीएसटी वर्ग के छात्रों का 27 हजार रुपये शुल्क है।

लूट के दौरान मारपीट करने वाले 03 अभियुक्त गिरतार

दैनिक बुद्ध का सन्देश बांसगांव,गोरखपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद गोरखपुर द्वारा लूट के अपराधों पर अंकुश लगाने और अपराधियों की गिरतारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में, पुलिस अधीक्षक



दक्षिणी व पुलिस अधीक्षक अपराध के मार्गदर्शन में, क्षेत्राधिकारी बांसगांव व क्षेत्राधिकारी खजनी/अपराध के पर्यवेक्षण में व थानाध्यक्ष बांसगांव चन्द्रभान सिंह मय टीम, स्वाट प्रभारी मय टीम व एसओजी प्रभारी मय टीम के द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर थाना स्थानीय पर पंजीत मुओअं0 499/2023 धारा 394 भादवि, बढोत्तरी धारा 411, 420, 467, 468, 471 भा0द0वि0 से संबंधित अभियुक्तों 1.अंकित तिवारी उर्फ शेरु उर्फ रजत पुत्र रमेश निवासी कोटिया विशुनपुर थाना सिकरीगंज जनपद गोरखपुर 2. केशर चन्द्र उर्फ केशर पुत्र सर्वजीत निवासी कोठरा थाना अहिरौली जनपद आजमगढ़ 3.करन पुत्र महेन्द्र निवासी छितैनी बुजुर्ग थाना बेलघाट जनपद गोरखपुर को गिरतार किया गया, जिनके पास से 01 अदद एक अदद तमंचा 315 बोर व 01 अदद जिन्दा कारतूस 315 व अन्य सामान बरामद हुए।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर 13 मामलों में से 1का हुआ निस्तारण

दैनिक बुद्ध का सन्देश गोला,गोरखपुर। गोला थाना पर शनिवार को संपूर्ण समाधान थाना दिवस का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता उपजिलाधिकारी गोला रोहित कुमार मौर्य ने किया।थाना दिवस पर 13 मामले आए



जिसमें से मात्र 1 मामले का निस्तारण हुआ। शेष मामलों के निस्तारण के लिए सम्बन्धित विभाग को सौंप दिया गया। अध्यक्षता कर रहे उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर बेवरी निवासी हरिनायण ने कहा कि मेरे पड़ोदार बिना बंटवारा किए ही पैतृक जमीन पर निर्माण कार्य करा रहे हैं। जिस पर उपजिलाधिकारी ने पुलिस व राजस्व टीम को मौक पर जाकर समस्या के समाधान का आदेश दिया। वहीं परसिया रावत गांव की महिला ने प्रार्थना पत्र देकर कहा कि बगल के गांव का एक व्यक्ति बहला-फुसलाकर जमीन लिखवा लिया और अब जमीन रजिस्ट्री के बाद लय किया गया रूपया नहीं दे रहा है। और गोपालपुर निवासी जयहिंद व अन्य लोगों ने प्रार्थना पत्र देकर कहा कि मेरे घर के बगल में एक सार्वजनिक रास्ता है। जिससे लगभग 20 घरों के लोगों का आना जाना है। उस रास्ते पर एक व्यक्ति द्वारा शौचालय का निर्माण किया जा रहा है। जिसके कारण मार्ग अवरुद्ध हो सकता है। इस दौरान क्षेत्राधिकारी अजय कुमार सिंह थानाध्यक्ष धीरेंद्र कुमार राय सहित तमाम राजस्व व पुलिसकर्मों मौजूद रहे।

नवनिर्मित आईटीआई में सीलन देख कमिश्नर हुए नाराज, सुधार का निर्देश

महराजगंज। कमिश्नर अनिल ढीगरा ने . जिले में विकास व निर्माण कार्यों का जायजा लिया। फर्रेंदा तहसील क्षेत्र में नवनिर्मित आईटीआई भवन के निरीक्षण में कक्षों में सीलन देख उन्होंने नाराजगी जताई व सुधार का निर्देश दिया। उन्होंने विभिन्न ट्रेड से संबंधित वर्कशॉप व अन्य कक्षों को देखा। सीलन व अन्य सुधार के लिए लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता को निर्देशित किया। खिड़कियों के शीशों को भी बदलने के साथ ही भवन में बचे हुए कार्यों को जल्द पूरा कर हैंडओवर करने का निर्देश दिया। कॉलेज को विद्युत आपूर्ति के लिए ट्रांसफॉर्मर लगवाने और वर्कशॉप में मशीनों को संचालित करने के लिए वायरिंग कार्यों को जल्द से पूरा करवाने को भी कहा। कॉलेज परिसर के समीप तालाब के सुदरीकरण के लिए ग्राम प्रधान व बीडीओ को निर्देशित किया। शैक्षणिक कार्य को शुरु करने के लिए स्टाॅफ की तैनाती के संबंध में शासन को पत्र भेजने के लिए कहा। जिसपर जिलाधिकारी ने अवगत

कराया कि शासन को पूर्व में ही पत्र प्रेषित किया जा चुका है। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी संतोष फंकर कुमार वर्मा आईटीआई प्राचार्य मसूद इशरत, सीवीओ डॉ. आरसी चौधरी, डीपीओ दुर्गेश कुमार, एसडीएम दिनेश कुमार मिश्र आदि उपस्थित रहे।

चेहरी के नवीन पटान पर सड़क निर्माण का भेजें प्रस्ताव कमिश्नर ने चेहरी तटबंध का निरीक्षण किया और जनपद में बाढ़ की स्थिति की जानकारी ली। जिलािाकारी ने बताया कि जिले में स्थिति अभी सामान्य है और लगातार तटबंधों की निगरानी की जा रही है। सिंचाई खंड-द्वितीय को वर्षा की स्थिति और नदियों के जलस्तर की लगातार निगरानी का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने निचलौल में चंदन नदी पर तटबंध और महाव नाले के चौड़ीकरण व नाले को गहरा करने की आवश्यकता के बारे में बताया, जिस पर मंडलायुक्त ने उच्चाधिाकारियों से वार्ता करने का आश्वासन दिया। चेहरी तटबंध पर नवीन

पटान पर सड़क निर्माण के लिए प्रस्ताव बनाने के लिए अधिशासी अभियंता सिंचाई खंड द्वितीय को निर्देश दिया। सभी ब्लॉकों में मॉडल लर्निंग लेब का करार निर्माण: सदर ब्लॉक के आंगनबाड़ी केंद्र सिसवा-अमहवा में मुख्य कक्ष, रसोई कक्ष और क्रीडकक्ष को देखा। कायाकल्प कार्य पर प्रसन्नता जताई एवं इसी तर्ज पर सभी ब्लॉकों में मॉडल लर्निंग लेब के निर्माण और 18 बिंदुओं पर संतुष्ट करने के लिए कहा। पोषाहार वितरण के विषय में भी जानकारी ली। जिलाधिकारी ने अवगत कराया कि टीएचआर प्लांट के माध्यम से पोषाहार की आपूर्ति की जाती है। जिस पर उन्होंने पोषाहार की गुणवत्ता की समय-समय पर जांच कराने निर्देश दिया। केंद्र पर बच्चों को टीफ़ी व चॉकलेट का वितरण किया। रैन बसेरा के विस्तार व मार्ग के मरम्मत पर दिया जाए जोर: कमिश्नर ने जिला संयुक्त चिकित्सालय का निरीक्षण करते हुए ओपीडी, दवा वितरण कक्ष (फार्मसी), सीटी-स्कैन कक्ष,

एसएनसीयू, केएमसी (कंगारू मंदर चाइल्ड) कक्ष, डायलिसिस कक्ष, ट्रॉमा सेंटर और रैन बसेरा को देखा। रैन बसेरा के लिए जगह चिन्हित कर जल्द से जल्द विस्तार करने को कहा। डायलिसिस कक्ष के सामने के मार्ग के मरम्मत का भी निर्देश दिया। मरीजों व उनके परिजनों से भी बात भी की और दवा वितरण की जानकारी ली।अस्पताल प्रशासन को अच्छी स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के लिए कहा।केएमसी वार्ड में माताओं में फल वितरण भी किया। कान्हा गोशाला की व्यवस्था पर जताया संतोष: कमिश्नर ने कान्हा गोशाला चिउरहा के निरीक्षण में पशुओं की संख्या और उनके लिए भूसा चारा की व्यवस्था के बारे में पूछा। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी ने बताया कि कान्हा सदन में कुल 96 गोवंशीय पशु हैं, जिनमें 27 गायें हैं। उन्होंने अवगत कराया की वर्तमान में पशुओं के लिए भूसे व चारे की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था की गई। जिस पर मंडलायुक्त ने कान्हा सदन की व्यवस्था पर संतोष जताया।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने सुनी आमजनमानस की शिकायतें, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण का दिया निर्देश

जमीन से जुड़े विवादों में लापरवाही बरतने पर जिलाधिकारी ने 02 राजस्व निरीक्षक एवं एक लेखपाल के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही का दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का सन्देश बलरामपुर। माह के चौथे शनिवार पर जनपद के सभी थानों में थाना समाधान दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर जिलाधिकारी अरविंद सिंह व पुलिस अधीक्षक केशव कुमार द्वारा थाना रेहरा बाजार एवं थाना सादुल्लाह नगर में पहुंचकर आम जनमानस की शिकायतों को सुना गया एवं शिकायतों के समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण

निर्देशित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा जमीनी विवाद से जुड़े कई मामलों में

में समझौता करते हुए निस्तारण कराया गया। उन्होंने कहा कि लेखपाल एवं कानूनगो को अपने

मामलों की पूर्णतया जानकारी हो तथा चक्रोटे,भूमि विवाद, पैमाइश आदि से जुड़े विवादों

का राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा उन्होंने कहा कि जमीनी विवाद से जुड़े मामलों की जानकारी लेखपाल एवं कानूनगो को कराया जाए। पूर्णतया हो, ग्राम स्तर पर जमीनी विवाद से जुड़े मामलों में किसी प्रकार की हीलाहवाली लापरवाही बरतने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान संबंधित थानों के थानाध्यक्ष व अन्य संबंधित

विभागीय कार्यवाही किए जाने का निर्देश संबंधित को दिए गए। उन्होंने कहा कि जमीनी विवाद से जुड़े मामलों की जानकारी लेखपाल एवं कानूनगो को कराया जाए। पूर्णतया हो, ग्राम स्तर पर जमीनी विवाद से जुड़े मामलों में किसी प्रकार की हीलाहवाली लापरवाही बरतने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान संबंधित थानों के थानाध्यक्ष व अन्य संबंधित अधिकारी/ कर्मचारीगण उपस्थित रहे।



आंगनबाड़ी केन्द्र गोरडीहा व तियरा का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

.आंगनबाड़ी केन्द्रों पर खेल-कूद समग्री पाकर बच्चों के खिले चेहरे, व्यक्त की प्रसन्नता

दैनिक बुद्ध का सन्देश सोनभद्र। जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने विकास खण्ड राबट्सगंज क्षेत्र के आंगनबाड़ी केन्द्र गोरडीहा व तियरा का निरीक्षण किया, इस दौरान जिलाधिकारी ने आंगनबाड़ी केन्द्र गोरडीहा पर पहुंचते तो वहां पर उपस्थित बच्चे जिला खनिज फाउण्डेशन निधि से उपलब्ध करायी गयी खेल-कूद सामग्री के साथ आंगनबाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों खेल रहे थे और बच्चों के चेहरे पर प्रसन्नता और खुशहाली देखते बन रही थी, पूरे आंगनबाड़ी परिसर में खुशहाली का माहौल था, इस दौरान जिलाधिकारी ने बच्चों के साथ सीधा संवाद करते हुए खेल



लगाभग 1 हजार वर्गफिट में तैयार की जायेगी, जिसमें पौधों को लगाने हेतु 8 क्यारी तैयार की

प्रारंभ हो चुका है, पोषण वाटिका जायेगी, जिसमें धनिया, पालक, मेथी, चौराई, टमाटर, पत्ता गोभी, फूल गोभी सहित साग-भाजी को सम्बन्धित बीज डाला जायेगा, जिससे पौधे तैयार होंगे, इसमें पपीता, सहिजन और आषधि प्रकार के पौधे जैसे-सतावर, तुलसी के पौधे तैयार किये जायेंगे, जिससे होने वाले उत्पादों को बच्चों के खाद्य सामग्री के रूप में उपयोग किया जायेगा जिससे कि आंगनबाड़ी केन्द्र में पढ़ने वाले बच्चों स्वस्थ रहें, जिससे कि उनका बौद्धिक स्तर और शैक्षिक स्तर भी विकसित हो सके। इस दौरान जिलाधिकारी ने उच्च प्राथमिक विद्यालय गोरडीहा का औचक निरीक्षण किया, निरीक्षणके दौरान जिलाधिकारी ने बच्चों को दी जा रही शिक्षा के सम्बन्ध में सम्बन्धित अध्यापकगणों से जानकारी ली

मध्यप्रदेश में आगामी चुनाव के मद्देनजर जनपद सिंगरौली में इण्टर स्टेट बार्ड मीटिंग आयोजित की गयी

दैनिक बुद्ध का सन्देश सोनभद्र। रुस्तम कॉफ्रेंस हॉल पुलिस अधीक्षक कार्यालय



जनपद सिंगरौली में इण्टर स्टेट बार्ड मीटिंग आयोजित की गयी। उक्त मीटिंग में मध्यप्रदेश में आगामी चुनाव के फिटगत सिंगरौली के जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक एवं सीमावर्ती जनपदों के पुलिस अधीक्षक तथा उच्चधिकारीगणों की उपस्थिति में आगामी चुनाव को संकुशल एवं कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में सम्पन्न कराये जाने हेतु सीमा पर कड़ी निगरानी, अवांछित तत्वों एवं अवैध पदार्थ के आवागमन पर रोक तथा इंटर स्टेट अपराधियों की लिस्ट का आदान-प्रदान एवं उनकी निगरानी हेतु विचार-विमर्श किया गया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक सोनभद्र डॉ० यशवीर सिंह व जनपद मिर्जापुर के उच्चधिकारीगण मौजूद रहे।

अखिल भारतीय विद्याथर्ष परिषद ने 8 सूत्रीय मांगों को लेकर जिलाधिकारी को सौंपा झापन

दैनिक बुद्ध का सन्देश रुराबट्सगंज, सोनभद्र। जिले में चल रहे अवैध विद्यालयों व



प्राइवेट विद्यालयों द्वारा हो रही अवैध धन वसूली और कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों के अनियमितता के संबंध में, जिले में संचालित 6- 12 तक तक चल रहे अवैध विद्यालयों व प्राइवेट विद्यालयों द्वारा हो रही अवैध फीस वसूली अवैध कोचिंग संस्थाओं को बंद करने अधिकांश विद्यालयों में जिले में क्रीडा शुल्क लेने का कार्य एवं खेल मैदानों की उचित व्यवस्था न होना जर्जर शासकीय स्कूलों का निर्माण करना विद्यालयों में भोजन की व्यवस्था खेल के मैदान पेयजल की व्यवस्था एवं शौचालय की व्यवस्था एवं स्वच्छता की व्यवस्था सहित आठ सूत्रीय मांगों को जिलाधिकारी सोनभद्र को संबोधित झापन उनकी अनुपस्थिति में जिला प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा जिसमें सौंपा और उनसे मांग की कि ऐसे विद्यालयों पर नियमानुसार तत्काल कठोर कार्यवाही की जाए वरना अभाविप चरणबद्ध तरीके से आंदोलन कर विद्यार्थियों को स्वयं दिलाएगी न्याय। इस दौरान प्रांत सोशल मीडिया संयोजक अनमोल सोनी विभाग संगठन मंत्री अनिल त्रिपाठी, जिला संयोजक सोनभद्र मृगांक दुबे, जिला संयोजक दुद्धी अमन जायसवाल जिला सह संयोजक मनमोहन निषाद, प्रांतों सह संयोजक नीरज गुप्ता, तहसील संयोजक राहुल जालान, चंदन वर्मा, ललितेश मिश्रा, जितेंद्र वर्मा रणजीत पटेल आदि मौजूद रहे।

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा वि०खं० रुपईडीहा का भरिया लबेदपुर गावं, पंचायत भवन का निर्माण ठेकेदारी पर कार्य मानक विहीन

ठेकेदार ने बताया कि ब्लॉक का एक बड़ा अधिकारी मेरा बड़ा भाई

बृजभूषण तिवारी/दैनिक बुद्ध का सन्देश गोंडा। मानकों की अनदेखी योगी सरकार को प्रधान व पंचायत



सचिव की खुली चुनौती। ग्राम पंचायत में विकास की रूपरेखा तैयार कर कार्यों का क्रियान्वयन करने के लिए पंचायत भवनों का निर्माण प्रदेश सरकार के द्वारा कराए जाने का निर्देश है लेकिन संबंधित अधिकारियों के द्वारा पंचायत भवन का निर्माण अनियमितताओं की भेंट व ठेकेदारी प्रथा पर परवान चढ़ाने में जुटी हुई है। ठेकेदार से जानकारी के अनुसार ब्लॉक में 3 ठेकेदारों द्वारा ली जाती है ब्लॉक के अंतर्गत गावों में बनने वाले सरकारी भवनों के निर्माण का ठेका। मानक विहीन पंचायत भवन निर्माण कार्य कर के इति श्री कर रहे हैं। जिससे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। विकासखंड रुपईडीहा के ग्राम पंचायत भरिया लबेदपुर से जुड़ा हुआ है जहां पर पंचायत भवन का निर्माण ठेकेदारी प्रथा पर कार्य तथा मानक विहीन किया जा रहा है। जानकारों की मानें तो पंचायत भवन निर्माण कार्य में पीले व दोगम ईंटों का प्रयोग किया जा रहा है। अन्य सामग्री में मानक के अनुसार प्रयोग नहीं हो रहा है जबकि प्रदेश सरकार के द्वारा प्रत्येक पंचायत भवन निर्माण के लिए चौदह लाख पचास हजार रूपए आवंटित किया गया है। सम्बंधित अधिकारियों व कर्मचारियों के द्वारा पंचायत भवन निर्माण कार्य में घोर अनियमितताओं की भेंट चढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं और सरकारी धनो का दुरुप्रयोग कर बंदर बांट किया जा रहा है।

संगठन की मजबूती को दवा विक्रेताओं को किया एकत्रित

सभी पदाधिकारी को दिलाई शपथ ईमानदारी से कार्य करने को किया अपील

दैनिक बुद्ध का सन्देश मुकाबला करने की बात कही सोनभद्र। रॉबट्सगंज दवा वही मुख्य अतिथि ने बताया की



दवा विक्रेताओं की समस्याओं के बारे में बात किया तथा दावों के रखरखाव तथा डिस्टेंस के बारे में अवगत कराया और सभी व्यापारियों को निडर होकर सही तरीके से काम करने की शपथ दिए। वहीं विशिष्ट अतिथि ने सभी व्यापारियों का मनोबल बढ़ाने हेतु व्यापार बढ़ाने व व्यापार बढ़ाने में आ रही रूकावटों से निजात दिलाने के लिए संबंधित जिला

अध्यक्ष बृज आनंद से अवगत कराते हुए हम तक पहुंचाया और हर एक लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहे जिससे हमारे दवा विक्रेताओं को किसी प्रकार से किसी का दबाव या नुकसान न झेलना पड़े वही पूरे कार्यक्रम का संचालन दवा विक्रेता समिति के मीडिया प्रभारी राजकुमार सत्यजीत ने किया।

इस दौरान समिति के पदाधिकारी महामंत्री अमित कुमार, कोषाध्यक्ष सुमित केशरी, उपाध्यक्ष अंकित पटेल चंद्रशेखर पांडे मनोज कुशवाहा कार्यक्रम के संयोजक लोकपति सिंह ने सभी के सम्मान में संगठित होकर सामाजिक कार्यक्रम को करने एवं पर चढ़कर लोगों की सेवा भी करने को प्रेरित किया सभी का आभार व्यक्त किया।

भूमि से जुड़े छोटे-छोटे विवाद राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर करे निस्तारण-जिलाधिकारी

दैनिक बुद्ध का सन्देश बलरामपुर। जनपद में माह के चौथे शनिवार पर जनपद के

सभी थानों में थाना समाधान दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर जिलाधिकारी अरविंद सिंह व पुलिस अधीक्षक श्री केशव कुमार द्वारा थाना रेहरा बाजार एवं थाना सादुल्लाह नगर में पहुंचकर आम जनमानस की शिकायतों को सुना गया एवं शिकायतों के समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण



के लिए संबंधित को निर्देशित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी महोदय द्वारा जमीनी विवाद से जुड़े कई मामलों में मौके पर ही वादी एवं प्रतिवादी में समझौता करते हुए निस्तारण कराया गया। उन्होंने कहा कि लेखपाल एवं कानूनगो को अपने क्षेत्र के जमीनी विवाद से जुड़े मामलों की पूर्णतया जानकारी हो तथा चकरोट भूमि विवाद, पैमाइश आदि से जुड़े विवादों का राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा मौके पर जाकर निस्तारण कराया जाए। जमीनी विवाद से जुड़े मामलों में लापरवाही बरतने पर जिलाधिकारी द्वारा कानूनगो नईम अहमद, षण कुमार मिश्रा एवं लेखपाल बेचन राम शास्त्री के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही किए जाने का निर्देश संबंधित को दिए गए। उन्होंने कहा कि जमीनी विवाद से जुड़े मामलों की जानकारी लेखपाल एवं कानूनगो को पूर्णतया हो, ग्राम स्तर पर छोटे-छोटे जमीनी विवादों के निस्तारण में तेजी लाएं, इसमें किसी प्रकार की हीलाहवाली या लापरवाही बरतने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान संबंधित थानों के थानाध्यक्ष व अन्य संबंधित अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो०:- 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो०:- 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो०:- 9454415936
एस डीएम बांसी	मो०:- 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो०:- 9454415939
एस डीएम इटवा	मो०:- 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो०:- 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो०:- 9454400305
थाना मोहाना	मो०:- 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो०:- 9454404235
थाना गोलौरा	मो०:- 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो०:- 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो०:- 9454404243
थाना उसका बाजार	मो०:- 9454404244

राष्ट्रीय दैनिक बुद्ध का संदेश

थाना शोहरतगढ़	मो०:- 9454404241
थाना खेसरहा	मो०:- 9454404236
थाना इटवा	मो०:- 9454404234
थाना चिल्हिया	मो०:- 9454404229
थाना डेवरुआ	मो०:- 9454404230
थाना भवानीगंज	मो०:- 9454404228
थाना मिश्रीलिया	मो०:- 9454404238
थाना सि०नगर	मो०:- 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो०:- 9454404232
थाना लोटन	मो०:- 9454404237
महिला थाना	मो०:- 9454404891

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट-हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद-सिद्धार्थनगर (30प्र०) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.-UPHIN/2012/49458

संस्थापक स्व. के.सी. शर्मा सम्पादक राजेश कुमार शर्मा

9415163471, 9453824459

दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917, 9415163471
@budhakaasandesh
budhakaasandeshnews@gmail.com
www.budhakaasandesh.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद जनपद-सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

लायंस क्लब राबट्सगंज में निशुल्क 38 मरीज के हुए जांच

दैनिक बुद्ध का सन्देश सोनभद्र। लायंस क्लब राबट्सगंज द्वारा निरुशुल्क नेत्र चिकित्सा



शिविर का आयोजन प्रत्येक माह की 26 तारीख को लायंस भवन में श्रीसदगुरु नेत्र चिकित्सालय, चित्रकूट के सहयोग से आयोजित किया जाता है, कैम्प लायंस भवन में होता है, आज डॉ०ईसाफ बक्स के नेतृत्व में आई टीम ने मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए 16 मरीज चित्रकूट गए। अध्यक्ष अमित जायसवाल, किशोरी सिंह, पूर्व मंडलाध्यक्ष हरीश अग्रवाल, सचिव विमल अग्रवाल, जयकुमार केशरी, मुकेश जायसवाल, श्याम बाबू, दया सिंह, जौन चैयरपर्सन अजीत जायसवाल आदि सदस्य उपस्थित रहकर कार्यक्रम को संपन्न कराए। 23 मरीजों को निःशुल्क शस्त्रिया दिया गया, दवा दी गई। जिसमें 26 जुलाई 2023 को 23 मोतियाबिंद के मरीजों का निःशुल्क ऑपरेशन हो चुका है, 37 मरीजों की जांच हो चुका है। निरीक्षण, दवा और चश्मा वितरण हुआ। अध्यक्ष अमित जायसवाल ने कहा कि आज के आयोजन में 16 मोतियाबिंद के मरीजों को ऑपरेशन के लिए चित्रकूट भेजा गया, हरीश अग्रवाल, अमित जायसवाल, विमल अग्रवाल, किशोरी सिंह संयुक्तरूप से कहा कि यह पुनीत कार्य लायंस क्लब द्वारा कई वर्षों से किया जा रहा है, निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में आज तक हुए सभी ऑपरेशन शत-प्रतिशत सफल रहे। 38 मरीजों की जांच हुई जिन्हें चश्मा एवं दवा मुत दिया गया। लायंस क्लब राबट्सगंज निरंतर इस तरह की सेवा करता रहता है।

